उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम

कक्षा XI

Part II

हिंदी

केरल सरकार

शिक्षा विभाग

2016

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by :

State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in
e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869
To be printed in quality paper - 80gsm map litho (snow-white)
© Department of Education, Government of Kerala

मित्रो,

संसार के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में सबसे अधिक बोली और समझी जानेवाली भाषा है हिंदी। विश्व भाषाओं में हिंदी को तीसरा स्थान प्राप्त है। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और राजभाषा का महत्वपूर्ण पद अलंकृत करती है। यह विभिन्न भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में बाँधकर एकता को सुदृढ़ करती है। हिंदी का साहित्य अत्यंत समृद्ध है जो विभिन्न विधाओं में बँटकर सहृदयों को आनंद देता है। ग्यारहवीं कक्षा की यह पुस्तक आठ साल के बाद बदल रही है। इसका प्रत्येक पाठ आपको आनंददायक लगेगा। पाठ्य-सामग्री को भली-भाँति समझने के लिए इसमें जो परिशिष्ट दिया गया है उसका लाभ उठाएँ।

यह पुस्तक नवीन शिक्षाप्रणाली को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। उम्मीद है कि इस पुस्तक के अध्ययन-अनुशीलन से आपको हिंदी भाषा और साहित्य का सही परिचय मिलेगा और भाषा-प्रयोग में आप सक्षम हो जाएँगे।

डॉ पि. ए. फातिमा,

निदेशक,

राज्य शैक्षिक अनुसंधान

एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

Textbook Development Team

Members

Dr. Sasidharan Kuniyal
GHSS Palayad, Kannur

Dr. Pramod P
DB HSS Thakazhy, Alappuzha

Sreekumaran B
GHSS Parambil, Kozhikode

Dr. N I Sudheesh Kumar
BNV V&HSS Thiruvallam,
Thiruvananthapuram

Ullas Raj
HDPS HSS Edathirinji, Thrissur

Daniel V Mathew
MSM HSS, Chathinamkulam, Kollam

Dr. Binu D
GHSS Mangad, Kollam

Vidhu V L
GVGHSS Chittoor, Palakkad

Dr. Manju Vijayan
GHSS Kallachi, Kozhikode

Lalu Thomas
St. Xaviers HSS chemmannar, Idukki

Experts

Dr.V P Muhammed Kunju Mether
Prof. (Rtd) Institute of Distance Education, University of Kerala
Thiruvananthapuram.

Prof. M.S Jayamohan
Prof. (Rtd) University College,
Thiruvananthapuram.

Dr. H Parameswaran
Principal. (Rtd) University College,
Thiruvananthapuram.

Dr. B Asok
Head of the Department, Govt. Brennen College Thallassery.

Dr. K.G Chandra Babu
Prof. (Rtd) University College
Thiruvananthapuram.

Artist

Rajendran C.
AVGVHS, Thazhava, Kollam

Layout

Haridas M A
Irinjalakuda

Academic Co-ordinator

Dr. Rekha R Nair
Research Officer, SCERT

State Council of Educational Research and Training(SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram - 695 012.

पन्ने पलटने पर...

इकाई एक
सपने-सुहाने

- **लघुकथा**
  अनुताप — सुकेश साहनी — 8-11
- **कविता**
  मधुऋतु — जयशंकर प्रसाद — 12-14
- **पत्र**
  यह हमारा अधिकार है... — 15-19
- **नाट्यरूपांतर**
  जुलूस — चित्रा मुद्गल — 20-30
- **शब्दार्थ** — 31-32

इकाई दो
चाँद-सितारे

- **कविता**
  दोहे — कबीरदास — 34-36
- **फिल्मी समीक्षा**
  ब्लैक: स्पर्श जहाँ भाषा बनता है... — 37-41
- **संपादकीय**
  आपकी आवाज़ — 42-45
- **कविता**
  चाँद और कवि — रामधारी सिंह दिनकर — 46-49
- **शब्दार्थ** — 50

इकाई तीन
जान-पहचान

- **निबंध**
  आनंद की फुलझड़ियाँ | अनंत गोपाल शेवड़े | 52-60
- **कविता**
  पत्थर की बेंच | चंद्रकांत देवताले | 61-64
- **अनुवाद**
  सृजन की ओर... | 65-67
- **कहानी**
  दुख | यशपाल | 68-79
- **शब्दार्थ** | 80

इकाई चार
दर-किनार

- **कहानी**
  अपराध | उदय प्रकाश | 82-87
- **पारिभाषिक शब्दावली**
  समय के साथ हम भी... | 88-90
- **कविता**
  कहना नहीं आता | पवन करण | 91-93
- **शब्दार्थ** | 94
- **परिशिष्ट** | 95-120

इकाई एक

सपने-सुहाने

अनुताप
मधुऋतु
यह हमारा अधिकार है...
जुलूस

अधिगम उपलब्धियाँ

- लघुकथा की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- लघुकथा के शीर्षक की सार्थकता पर चर्चा करके अपना विचार प्रकट करता है।
- सहजीवों से हमदर्दी प्रकट करता है।
- छायावादी कविता की शैली एवं प्रवृत्तियाँ पहचानकर वर्गीकरण करता है।
- छायावादी कविता का आस्वादन करके टिप्पणी लिखता है।
- सौंदर्यानुभूति प्राप्त करता है।
- सूचना का अधिकार अधिनियम की अवधारणा पाकर पत्र तैयार करता है।
- नागरिक का दायित्व निभाता है।
- नाट्यरूपांतर की शैली पहचानता है।
- नाट्यरूपांतर का आस्वादन करके पात्रों के चरित्र पर टिप्पणी लिखता है।
- नाटक का मंचीकरण करता है।
- देशप्रेम का आदर्श पाता है।

सुकेश साहनी

जन्म : 5 सितंबर 1956, लखनऊ (उ.प्र)

प्रमुख रचनाएँ : लघुकथा-संग्रह - डरे हुए लोग, ठंडी रजाई
कहानी-संग्रह - मैम्मा और अन्य कहानियाँ
अनुवाद - खलील जिब्रान की लघुकथाएँ

पुरस्कार : डॉ. परमेश्वर गोयल लघुकथा सम्मान
माता शरबती देवी पुरस्कार
डॉ. मुरली मनोहर हिंदी साहित्यिक सम्मान

विशेषताएँ :
* हिंदी लघुकथा क्षेत्र का सशक्त हस्ताक्षर।
* टूटते सामाजिक मूल्यों पर चिंता।
* ग्राम-संस्कृति का भोला-भाला चित्र।
* शहरी सभ्यता के खोखलेपन के पीछे भागते लोगों की व्यथा।
* निम्न मध्यवर्ग की पीड़ा और निराशा।

देन : संवेदनशील भावुक शैली।

संप्रति : भूगर्भ जल विभाग में अधिकारी

ई-मेल : sahnisukesh@gmail.com

लघुकथा आकार में लघु होने के बावजूद कहानी का एक प्रकार है। लघुकथा का भेद मात्र आकारगत न होकर अनुभूति की संश्लिष्टता को लेकर है। लघुकथा कथा का लघुतम रूप है, परंतु कथा-सारांश नहीं। मनुष्य की ओर से ज़िंदगी में कहीं-कहीं जाने-अनजाने गलतियाँ होती हैं। कुछ गलतियाँ ऐसी हैं जिसकी मरहम-पट्टी संभव है, परंतु कुछ का कोई इलाज संभव नहीं। जिस मनुष्य के दिल में सहजीव के प्रति संवेदना है, वह ऐसी हालत में पश्चाताप-विवश बन जाएगा। **अनुताप** इसी संवेदना से युक्त है।

श्रमजीवियों की पीड़ा और बेबसी पर सुकेश साहनी की लघुकथा....

अनुताप

"बाबूजी आइए ... मैं पहुँचाए देता हूँ।"
एक रिक्शेवाले ने उसके नज़दीक आकर कहा,
"असलम अब नहीं आएगा।" "क्या हुआ उसको?"
रिक्शे में बैठते हुए उसने लापरवाही से पूछा। पिछले चार-पाँच दिनों से असलम ही उसे दफ़्तर पहुँचाता रहा था।

'उसे शाक-सा लगा'- क्यों?

"बाबूजी, असलम नहीं रहा ..."
"क्या?"
उसे शाक-सा लगा,
"कल तो भला चंगा था।"
"उसके दोनों गुर्दों में खराबी थी, डॉक्टर ने रिक्शा चलाने से मना कर रखा था,"
उसकी आवाज़ में गहरी उदासी थी,
"कल आपको दफ़्तर पहुँचाकर लौटा तो पेशाब बंद हो गया था,अस्पताल ले जाते समय उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया था ...।"

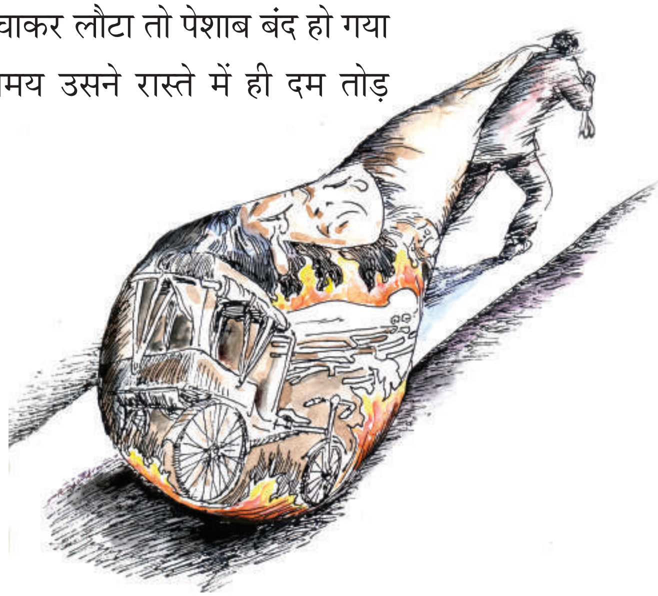

आगे वह कुछ नहीं सुन सका। एक सन्नाटे ने उसे अपने आगोश में ले लिया ...। कल की घटना उसकी आँखों के आगे सजीव हो उठी। रिक्शा नटराज टाकीज़ पार कर बड़े डाकखाने की ओर जा रहा था। रिक्शा चलाते हुए असलम धीरे-धीरे कराह रहा था। बीच-बीच में एक हाथ से पेट पकड़ लेता था। सामने डाक बंगले तक चढ़ाई ही चढ़ाई थी। एकबारगी उसकी इच्छा हुई थी कि रिक्शे से उतर जाए। अगले ही क्षण उसने खुद को समझाया था – रोज़ का मामला है... कब तक उतरता रहेगा... ये लोग नाटक भी खूब कर लेते हैं, इनके साथ हमदर्दी जताना बेवकूफ़ी होगी... अनाप-शनाप पैसे माँगते हैं, कुछ कहो तो सरेआम इज़्ज़त उतारने पर आमादा हो जाते हैं असलम रिक्शे से उतर पड़ा था, दाहिना हाथ गद्दी पर जमाकर चढ़ाई पर रिक्शा खींच रहा था। वह बुरी तरह हाँफ रहा था, गंजे सिर पर पसीने की नन्हीं-नन्हीं बूँदें दिखाई देने लगी थीं...।

'इनके साथ हमदर्दी जताना बेवकूफ़ी होगी' – यहाँ यात्री का कौन-सा मनोभाव प्रकट हो रहा है?

किसी कार के हार्न से चौंककर वह वर्तमान में आ गया। रिक्शा तेज़ी से नटराज से डाक बंगलेवाली चढ़ाई की ओर बढ़ रहा था।

"रुको!"

एकाएक उसने रिक्शेवाले से कहा और रिक्शे के धीरे होते ही उतर पड़ा। रिक्शेवाला बहुत मज़बूत कदकाठी का था। उसके लिए यह चढ़ाई कोई खास मायने नहीं रखती थी। उसने हैरानी से उसकी ओर देखा। वह किसी अपराधी की भाँति सिर झुकाए रिक्शे के साथ-साथ चल रहा था।

'वह किसी अपराधी की भाँति सिर झुकाए रिक्शे के साथ-साथ चल रहा था', क्यों?

अनुवर्ती कार्य

➤ **ये प्रसंग किन-किन पात्रों से संबंधित हैं ?**

- उसे शाक-सा लगा।
- उसकी आवाज़ में गहरी उदासी थी।
- उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया।
- कल की घटना उसकी आँखों के आगे सजीव हो उठी।
- एकबारगी उसकी इच्छा हुई कि रिक्शे से उतर जाए।
- किसी कार के हार्न से चौंककर वह वर्तमान में आ गया।
- उसके लिए यह चढ़ाई खास मायने नहीं रखती थी।
- वह अपराधी की भाँति सिर झुकाए चल रहा था।

➤ **यात्री का मन संघर्ष से भरा था। वह अपना संघर्ष डायरी में लिख रहा है। वह डायरी लिखें।**

- असलम की मृत्यु की खबर
- असलम के प्रति अपना व्यवहार
- हमदर्दी का अभाव
- पश्चाताप से उत्पन्न अनुताप

डायरी की परख, मेरी ओर से

- *घटना की सूचना है।*
- *संवेदना की अनुभूति है।*
- *आत्मसंघर्ष की अभिव्यक्ति है।*
- *आत्मपरक शैली है।*

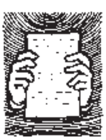

➤ **नीचे दिए मुद्दों के आधार पर अनुताप शीर्षक की सार्थकता पर अपना विचार प्रकट करें-**

- पाठ के केंद्र-भाव को सूचित करता है।
- चरमसीमा तक पढ़ने को प्रेरित करता है।
- संक्षिप्त, पर स्पष्ट है।
- सार्थक एवं संगत है।

जयशंकर प्रसाद

जन्म	:	30 जनवरी 1889, वाराणसी, उत्तर प्रदेश		
मृत्यु	:	14 जनवरी 1937		
प्रमुख रचनाएँ	:	काव्य	-	झरना, आँसू, लहर, प्रेम-पथिक, कामायनी
		नाटक	-	स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जनमेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री, अजातशत्रु
		कहानी-संग्रह	:	छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इंद्रजाल
		उपन्यास	:	कंकाल, तितली, इरावती

विशेषताएँ :

* प्रतिभाशाली रचनाकार।
* साहित्य की विभिन्न विधाओं में सृजन।
* छायावादी कवियों में अग्रणी।
* तत्सम-प्रधान शब्दावली का समर्थक।
* गीतिशैली का प्रयोक्ता।

देन : काव्य में अतिशय कल्पना का संचार करके कविता को आम धरातल से उठा दिया।

आधुनिक हिंदी कविता की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है छायावाद। प्रेम, प्रकृति, सौंदर्य, मानवीकरण, लाक्षणिकता, चित्रमयता, काल्पनिकता, कोमलकांत पदावली, मधुरता, सरसता आदि छायावादी कविता की पहचान हैं। प्रसाद की **मधुऋतु** कविता में छायावाद की सारी विशेषताएँ समाहित हैं।

छायावादी गीतिशैली में लिखी गई प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य की कविता...

मधुऋतु

अरे आ गई है भूली-सी
यह मधुऋतु दो दिन को,
छोटी-सी कुटिया मैं रच दूँ,
नई व्यथा साथिन को!
वसुधा नीचे ऊपर नभ हो,
नीड़ अलग सबसे हो,
झाड़खंड के चिर पतझड़ में
भागो सूखे तिनको!
आशा से अंकुर झूलेंगे
पल्लव पुलकित होंगे,
मेरे किसलय का लघुभव यह,
आह, खलेगा किनको?
सिहर भरी कँपती आवेंगी
मलयानिल की लहरें,
चुंबन लेकर और जगाकर-
मानस नयन नलिन को।
जवा कुसुम-सी उषा खिलेगी
मेरी लघुप्राची में,
हँसी भरे उस अरुण अधर का
राग रँगेगा दिन को।
अंधकार का जलधि लाँघकर
आवेंगी शशि-किरनें
अंतरिक्ष छिड़केगा कन-कन
निशि में मधुर तुहिन को
इस एकांत सृजन में कोई
कुछ बाधा मत डालो
जो कुछ अपने सुंदर से हैं
दे देने दो इनको।

'सूखे तिनको' से क्या तात्पर्य है?

'उषा' शब्द किन-किन की ओर इशारा करता है?

अनुवर्ती कार्य

➤ **छायावाद में कवि कोमल पदावलियों का प्रयोग करते थे। निम्नलिखित शब्दों के स्थान पर कविता में प्रयुक्त शब्द छाँटकर लिखें।**

वसंत, मौसम, भूमि, आकाश, जंगल, शिशिर, कलि, किसलय, मलयसमीर, आँख, कमल, प्रभात, पूरब, समुद्र, चाँद, रात

➤ **निम्नलिखित पंक्तियों का आशय व्यक्त करें।**

इस एकांत सृजन में कोई
कुछ बाधा मत डालो
जो कुछ अपने सुंदर से हैं
दे देने दो इनको।

➤ **निम्नलिखित छायावादी प्रवृत्तियों को सूचित करनेवाली पंक्तियाँ लिखें।**

- प्रकृति चित्रण
- मानवीकरण
- सौंदर्यवर्णन
- प्रेमानुभूति

➤ **कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।**

आस्वादन-टिप्पणी की परख, मेरी ओर से

- *कवि का परिचय है।*
- *कविता की काव्यधारा और रचनाकाल की सूचना है।*
- *कविता का सार है।*
- *अपने दृष्टिकोण में कविता का विश्लेषण किया है।*
  (काव्यधारा और रचनाकाल के अनुरूप भाषा, प्रतीक आदि।)

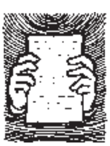

इन बिंदुओं पर ध्यान देते हुए कविता का आलाप करें।

- भावानुकूल प्रस्तुति
- उचित ताल-लय
- सटीक शब्द-विन्यास

सूचना का अधिकार अधिनियम

पत्र-व्यवहार

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में जन-साधारण ही देश का असली मालिक होता है। मालिक होने के नाते जनता को यह जानने का हक है कि जो सरकार उसकी सेवा के लिए बनाई गई है, वह क्या, कहाँ और कैसे कर रही है।

2005 में देश की संसद ने एक कानून पारित किया जो 'सूचना का अधिकार अधिनियम 2005' के नाम से जाना जाता है। इस अधिनियम में व्यवस्था की गई है कि किस प्रकार नागरिक सरकार से सूचना माँगेंगे और किस प्रकार सरकार जवाबदेह होगी।

सूचना का अधिकार अधिनियम हर नागरिक को अधिकार देता है कि वह सरकार से कोई भी सवाल पूछ सके या कोई भी सूचना ले सके, किसी भी सरकारी दस्तावेज़ की प्रमाणित प्रति ले सके, किसी भी सरकारी दस्तावेज़ की जाँच कर सके, किसी भी सरकारी काम की जाँच कर सके, किसी भी सरकारी काम में इस्तेमाल सामग्री का प्रमाणित नमूना ले सके। लेकिन इस नियम में सैन्य बल, सी.बी.आई जाँच ज़ारी रहनेवाले मामले, विदेशी सरकारों से विश्वास के नाते प्राप्त तथा मान्य व्यक्ति के उपचार और बीमारी से जुड़ी सूचनाएँ प्रदान करने से इनकार किया जा सकता है।

आम जनता की सुरक्षा तथा भलाई के लिए संसद द्वारा पारित अधिनियम का फ़ायदा उठाने हेतु...

यह हमारा अधिकार है...

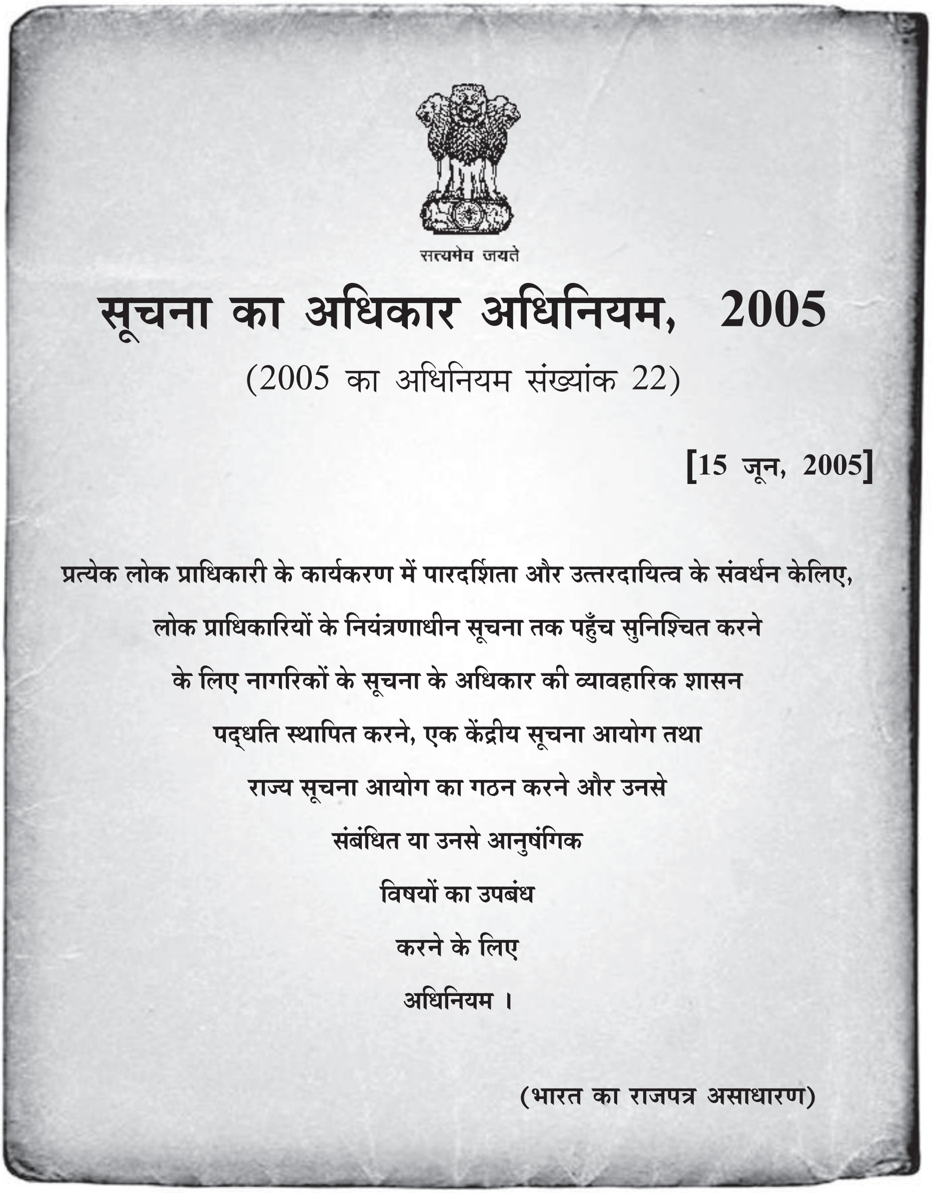

सत्यमेव जयते

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005

(2005 का अधिनियम संख्यांक 22)

[15 जून, 2005]

प्रत्येक लोक प्राधिकारी के कार्यकरण में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के संवर्धन केलिए, लोक प्राधिकारियों के नियंत्रणाधीन सूचना तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए नागरिकों के सूचना के अधिकार की व्यावहारिक शासन पद्धति स्थापित करने, एक केंद्रीय सूचना आयोग तथा राज्य सूचना आयोग का गठन करने और उनसे संबंधित या उनसे आनुषंगिक विषयों का उपबंध करने के लिए अधिनियम ।

(भारत का राजपत्र असाधारण)

कोलाज देखें...

इस दृश्य ने आपके दिल में कौन-सी प्रतिक्रिया जगाई ?

➤ **कोलाज के लिए उचित पादटिप्पणी लिखें।**

पादटिप्पणी की परख, मेरी ओर से

- *लक्ष्यार्थ पर केंद्रित है।*
- *समूचे भाव को आत्मसात किया है।*
- *प्रभावशाली है।*

सार्वजनिक सूचना अधिकारी के नाम पत्र...

सेवा में,

सार्वजनिक सूचना अधिकारी
रोज़गार मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

1.	आवेदक का नाम	हरिता एम
2.	डाक का पूरा पता	हरितम, शांति नगर, तिरुवनंतपुरम-22
3.	सूचना का विषय	बालश्रम को रोकने के लिए रोज़गार मंत्रालय द्‌वारा की गई कार्रवाइयों से संबंधित।
4.	माँगी गई सूचना का विवरण	1. क्या भारत में बालश्रम पर कानूनी रोक है? तो बालश्रम रोकने और उसके खिलाफ़ समाज को सचेत करने के कौन कौन-से प्रावधान हैं? 2. मंत्रालय द्‌वारा रोज़गार जगहों में सूचना-पट लगवाने की कौन कौन-सी कार्रवाइयाँ ली गई हैं? 3. बालश्रम के बारे में पता चलने पर किस कार्यालय में सूचना देनी है? कार्यालय का दूरभाषा उपलब्ध करा सकते हैं? बालश्रम के लिए प्रेरित करनेवालों को मिलनेवाला अधिकतम दंड क्या है?
5.	सूचना डाक या दस्ती में।	डाक द्‌वारा।

(हस्ताक्षर)

तिरुवनंतपुरम
10-07-2014

हरिता एम

अनुवर्ती कार्य

➤ **पत्र के आधार पर लिखें।**

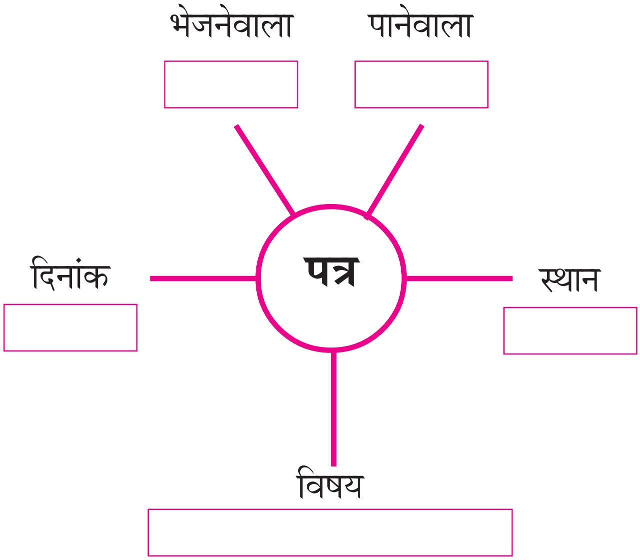

➤ **पाठकनामा पढ़ें**

सरकारी उच्च माध्यमिक स्कूल चिट्टारिपरंब में लगभग तीन हज़ार छात्र अध्ययन कर रहे हैं। वे शहर की विभिन्न जगहों से आते हैं। अधिकांश छात्र बस का सहारा लेते हैं। बस कम होने की वजह से छात्रों को बड़ी परेशानी होती है। अधिकारियों के सामने कई बार यह समस्या लाई गई, पर कोई फायदा नहीं हुआ। जल्द-ही-जल्द इसपर कार्रवाई करने की ज़रूरत है।

राजेश कुमार
सदस्य, अध्यापक-अभिभावक संघ

पाठकनामा के विषय पर क्या कार्रवाई की गई, उसकी जानकारी पाने के लिए सार्वजनिक सूचना अधिकारी, जिला परिवहन कार्यालय, कण्णूर के नाम एक सूचना अधिकार पत्र तैयार करें।

चित्रा मुद्‌गल

जन्म	:	10 दिसंबर 1944, चेन्नै (तमिलनाडु)
प्रमुख रचनाएँ	:	उपन्यास - गिलिगडु, आवाँ, एक ज़मीन अपनी
		कहानी-संग्रह - भूख, लपटें, मामला आगे बढ़ेगा अभी, पेंटिग अकेली है
		नाट्यरूपांतर - पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी, सद्‌गति, जुलूस
पुरस्कार	:	इंदुशर्मा कथा सम्मान
		उत्तरप्रदेश साहित्य भूषण
		के.के. बिड़ला फाउंडेशन का व्यास सम्मान
विशेषताएँ	:	* बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा।
		* स्त्री-पुरुष समभावना पर बल।
	:	* नारी-उत्पीड़न के प्रति विरोध।
देन		उपेक्षित एवं उत्पीड़ित भारतीय नारी के लिए समर्पित साहित्य।
संप्रति	:	विभिन्न नारी संघों की संचालिका
ई-मेल	:	mail@chitramudgal.info

कहानी-सम्राट प्रेमचंद की कहानी का, चित्रा मुद्‌गल का नाट्यरूपांतर है **जुलूस**। हिंदी कथा साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कथाकार हैं प्रेमचंद। कल्पना की उड़ान भरती कहानी को सचाई के धरातल पर ला खड़ा करके प्रेमचंद ने साधारण जनता की पीड़ा को वाणी दी। जुलूस कहानी देशप्रेम को मुखरित करती है। चित्रा मुद्‌गल ने प्रस्तुत कहानी का नाट्यरूपांतर किया है। लेखिका ने कहानी को दृश्यों में बाँटा है और उन्होंने संवाद के द्‌वारा कहानी के साथ न्याय किया है। इस कहानी के नाट्यरूपांतर के पीछे एक आकस्मिक घटना है।
(घटना जानने के लिए देखें परिशिष्ट पृष्ठसंख्या 105 -107 चित्रा मुद्‌गल की ई-मेल)

हिंदी के कालजयी कहानीकार प्रेमचंद के प्रति नई पीढ़ी की सशक्त लेखिका चित्रा मुद्‌गल की श्रद्‌धांजलि....

जुलूस

(नेपथ्य में, स्वराजियों का जुलूस आ रहा है। लोग अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ नारे लगा रहे हैं और भारत माता की जय-जयकार कर रहे हैं।)

अंग्रेज़ो भारत छोड़ो!
अंग्रेज़ो भारत छोड़ो!
जय भारत माता!

(सड़क से लगे बाज़ार में दूकानदार बहस कर रहे हैं।)

शंभुनाथ : *(नारों को सुनकर व्यंग्य से)* देख रहे हैं न दीनदयाल जी! सबके सब काल के मुँह में जा रहे हैं। स्वराज लाने चले हैं। आगे पुलिस सवारों का दल खड़ा हुआ है, मार-मार कर भगा देगा।

दीनदयाल : महात्मा जी भी सठिया गए हैं शंभुनाथ भैया! जुलूस निकालने से स्वराज मिल जाता तो कब का मिल गया होता! तनिक देखो तो, जुलूस में हैं कौन? लौंडे-लफ़ंगे सिर-फ़िरे! शहर का कोई बड़ा आदमी दिख रहा? तो फिर हमें क्या पड़ी है अपनी दुकान बंद कर जुलूस में आएँ?

(बाज़ार में चप्पलें बेच रहा मैकू उन दोनों की बातें सुन ठठाकर हँस पड़ता है)

शंभुनाथ : *(चिढ़कर)* तू अपनी चट्टियाँ और चप्पलें बेच मैकू, ठिठया काहे रहा? लगता है आज बिक्री अच्छी हो गई?

मैकू : बिक्री-विक्री छोड़ो शंभू भैया। हँस रहा हूँ, तुम्हारी बात पे!

शंभुनाथ : किस बात पे?

मैकू : अरे बड़े आदमी काहे जुलूस में आने लगे? अंग्रेज़ी राज में उन्हें कौन कमी। ठाठ से बंगलों और महलों में रहते हैं। मोटरों में घूमते हैं। मर तो हम लोग रहे, जिनकी रोटियों का ठिकाना नहीं!

शंभुनाथ : *(कटाक्ष से)* तुम यह सब बातें क्या समझोगे मैकू! जिस काम में चार बड़े आदमी अगुआ होते हैं... सरकार पर भी उसकी धाक बैठ जाती है। लौंडे-लफ़ंगों का ग़ोल भला हाकिमों की निगाह में क्या जँचेगा?

मैकू : हमारा बड़ा आदमी तो वही है जो लंगोटी बाँधे नंगे पाँव घूमता है। जो हमारी दशा सुधारने के लिए अपनी जान हथेली पर लिए फिरता है। वह है महात्मा गाँधी। उसके आगे हमें किसी बड़े आदमी की परवाह नहीं!

(नेपथ्य में जुलूस के नारे प्रखर होने लगते हैं)

दीनदयाल : नया दारोगा बीरबल सिंह बड़ा जल्लाद है मैकू। जुलूस के चौरास्ते पर पहुँचते ही हंटर लेकर पिल पड़ेगा। फिर देखना ये स्वराजी कैसे दुम दबा कर भाग खड़े होंगे! उधर देख मैकू! देख! सिपाहियों ने जुलूसियों को रोक दिया है...।

(संगीत)

(दृश्यांतर)

(सिपाहियों के साथ घोड़े पर सवार दारोगा बीरबल स्वराजियों पर गरजता है)

बीरबल सिंह : रुक जाओ... तुम लोगों को आगे जाने का हुक़्म नहीं है!

(जुलूस में दबी ज़ुबान से खुसुर-फ़ुसुर–ये नया दारोगा है... हाँ भई, इसीका नाम बीरबल

सिंह है!... सुना है बड़ा जल्लाद है... शांत भाइयो! शांत! सुनो इब्राहिम अली दारोगा से क्या कह रहे हैं?)

इब्राहिम अली : *(ऊँचे स्वर में)* दारोगा साहब! मैं आपको इत्मीनान दिलाता हूँ कि किसी क़िस्म का दंगा-फ़साद न होगा! हम दुकानें लूटने या मोटरें तोड़ने नहीं निकले हैं... हमारा मक़सद इससे कहीं ऊँचा है!

बीरबल सिंह : इब्राहिम साहब! मुझे यह हुक़्म है कि जुलूस यहाँ से आगे न जाने पाए।

इब्राहिम अली : आप अपने अफ़सरों से ज़रा पूछ न लें?

बीरबल सिंह : मैं इसकी कोई ज़रूरत नहीं समझता।

इब्राहिम अली : तो हम लोग यहीं बैठते हैं! जब आप लोग चले जाएँगे तो हम निकल जाएँगे!

बीरबल सिंह : यहाँ खड़े होने का भी हुक़्म नहीं है! आप लोगों को वापस जाना पड़ेगा!

इब्राहिम अली : *(गंभीरता से)* वापस तो हम न जाएँगे! आपको या किसीको हमें रोकने का कोई हक़ नहीं है। आप अपने सवारों, संगीनों और बंदूकों के ज़ोर से हमें रोकना चाहते हैं, रोक लीजिए। मगर आप हमें लौटा नहीं सकते।

बीरबल सिंह : *(तैश में)* हमारा हुक़्म क्या आपको सुनाई नहीं पड़ा?

इब्राहिम अली : न जाने वह दिन कब आएगा, जब हमारे भाईबंद ऐसे हुक़्मों की तामील करने से साफ़ इनकार कर देंगे जिनकी मंशा महज़ क़ौम को गुलामी की जंजीरों में जकड़े रखना है।

बीरबल सिंह : *(विनम्र होकर)* डी.एस.पी साहब आ रहे हैं इब्राहिम साहब! उससे पहले आप लोग वापस लौट जाएँ!

(स्वराजी समवेत स्वर में... हम नहीं जाएँगे! हम नहीं जाएँगे!)

बीरबल सिंह : फिर से सोच लें! बहुत नुकसान उठाना पड़ेगा!

(स्वराजी समवेत स्वर में... हमें कोई मलाल नहीं... भारत माता की जय... जय भारत जय भारत।)

बीरबल सिंह : *(आदेशात्मक स्वर में)* सिपाहियो, लाठी चार्ज करो!

(लाठी चार्ज की ध्वनि। घोड़ों की टापों और हिनहिनाने की आवाज़ों के बीच स्वराजियों के घायल होने के आर्त स्वर)

बीरबल सिंह : *(चेतावनी भरे स्वर में)* अभी भी वक़्त है, इब्राहिम अली साहब... आप मेरे सामने से हट जाएँ!

इब्राहिम अली : *(चुनौती भरे स्वर में)* आप बेटन चलाएँ दारोगा जी!

(सिर पर बेटन से वार होते ही इब्राहिम अली की कारुणिक आह निकलती है... और अगले ही पल उनका सिर घोड़े की टापों के नीचे आकर फट जाता है। स्वाधीनता सेनानी अधीर हो आते हैं।)

स्वराजी 1 : *(घबराए स्वर में)* अरे देखो-देखो! दारोगा ने अपना घोड़ा इब्राहिम साहब के ऊपर चढ़ा दिया। उनका सिर फट गया!

स्वराजी 2 : सिर से खून निकल रहा है... जल्लाद दारोगा! अंग्रेज़ों का पिट्ठू है तू...

स्वराजी 3 : हम किराए के टट्टू नहीं है जो तेरी निर्दयता से डरकर पलट लें। स्वाधीनता के सच्चे सेवक हैं। अपनी जान दे देंगे मगर भारत माँ के हाथों में बेड़ियाँ नहीं बरदाश्त करेंगे... भारत माता की जय। *(सभी स्वराजी दुहराते हैं। साथ ही चारों ओर चीख-पुकार के आर्त स्वर गूँजते हैं)*

(संगीत–आज़ादी के किसी गीत की धुन)

(दृश्यांतर)

(बाज़ार में धड़ाधड़ दुकानों के शटर गिरने लगते हैं। तनाव-भरी टिप्पणियाँ-

1. सुनते हो, इब्राहिम अली घोड़े से कुचल गए...

2. कई स्वराजी जख्मी हो गए... न वे पीछे हटते हैं,न पुलिस उन्हें आगे जाने देती है...

3. शहर में तनाव फैल रहा है।)

मैकू : अब तो भाई, रुका नहीं जाता... मैं भी जुलूस में शामिल होऊँगा...

दीनदयाल : दुकान बंद कर मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ मैकू ! शंभू, तुम क्या सोच रहे हो ?

शंभुनाथ : विरोध में पूरा बाज़ार बंद हो रहा... मैं कैसे अपनी दुकान खुली रख सकता हूँ ? एक दिन तो मरना ही है, जो कुछ होना है हो... आखिर वे लोग, सभी के लिए तो जान दे रहे हैं !

(नेपथ्य से सैकड़ों लोगों की उत्तेजित आवाज़ आती है– मारो ! मारो ! सिपाहियों को मारो ! ये अपने ही भाई-बंधु हैं मगर अंग्रेज़ों के पिट्ठू बन गए हैं)

(संगीत–आज़ादी की धुन)

(दृश्यांतर)

(उमड़ती चली आ रही उत्तेजित भीड़ का स्वर नज़दीक आ रहा है। तभी एक मोटरकार के स्टार्ट होने की ध्वनि।)

बीरबल सिंह : *(घबड़ाकर)* अरे, डी.एस.पी. साहब तो चल दिए ? अब मैं क्या करूँ अहिंसा के व्रतधारियों पर डंडे बरसाना और बात है, हिंसक भीड़ का सामना करना और ! *(आदेशात्मक स्वर में)* सिपाहियो ! आहिस्ता से पीछे हट लो ! *(घोड़ों की टापों के मुड़ने का स्वर)*

इब्राहिम अली : *(कराहते हुए)* क्यों कैलाश, ये आवाज़ें कैसी हैं? क्या लोग शहर से आ रहे हैं?

कैलाश : *(चिंतित होकर)* जी हाँ... हज़ारों आदमी हैं!

इब्राहिम अली : तो अब ख़ैरियत नहीं! झंडा लौटा दो! हमें फ़ौरन लौट चलना चाहिए! नहीं तो तूफ़ान मच जाएगा। हमें अपने भाइयों से लड़ाई नहीं करनी है। कहो कहो सबसे, वापस लौट चलें!

कैलाश : ये आप क्या कर रहे, उठने की कोशिश क्यूँ कर रहे? जैसा आप कहेंगे, वैसा ही होगा। *(लोगों की ओर मुड़कर)* भाइयो, इब्राहिम चाचा के लिए जल्दी से स्ट्रेचर तैयार करो। झंडियों के बाँसों को साफ़ों और रूमालों से बाँधो! जल्दी करो!

इब्राहिम अली : *(काँपती आवाज़ में)* लोगों की मनोवृत्ति में आया वह परिवर्तन ही हमारी असली विजय है। हमारा उद्देश्य केवल जनता की सहानुभूति प्राप्त करना है। उनकी मनोवृत्ति को बदल देना है। जिस दिन हम इस लक्ष्य पर पहुँच जाएँगे, उसी दिन स्वराज्य सूर्य का उदय होगा! जय भारत। *(सभी जोशीले स्वर में जय भारत दोहराते हैं)*

(संगीत-आज़ादी की धुन)

अनुवर्ती कार्य

- **समानार्थी शब्द नाटक में ढूँढ़ें-**

  दृश्य - 1 जनयात्रा, विरुद्‌ध, विक्रय, शासक, चिंता, निर्दय

  दृश्य - 2 आज्ञा, वाणी, प्रकार, लक्ष्य, पालन, इच्छा, केवल, देश, हानि, विषाद, सहन

  दृश्य - 3 घायल, अंत

  दृश्य - 4 पास, धीरे, कुशल, ओजपूर्ण

- **निम्नलिखित कथन किस पात्र का है ?**

  * *हमारा हुक़्म क्या आपको सुनाई नहीं पड़ा?*
  * *जुलूस निकालने से स्वराज मिल जाता तो कबका मिल गया होता।*
  * *हमारा बड़ा आदमी तो वही है जो लंगोटी बाँधे नंगे पाँव घूमता है।*
  * *एक दिन तो मरना ही है, जो कुछ होना है हो।*
  * *मर तो हम लोग रहे जिनकी रोटियों का ठिकाना नहीं।*
  * *हमारा मक़सद इससे कहीं ऊँचा है।*

- **निम्नलिखित कथन इब्राहिम अली के चरित्र की किन-किन विशेषताओं को उजागर करता है?**

  * हम दुकानें लूटने या मोटरें तोड़ने नहीं निकले हैं।
  * आप अपने सवारों, संगीनों और बंदूकों के ज़ोर से हमें रोकना चाहते हैं—रोक लीजिए! मगर आप हमें लौटा नहीं सकते।
  * हमारे भाईबंद ऐसे हुक़्मों की तामील करने से साफ़ इनकार कर देंगे।
  * जिस दिन हम इस लक्ष्य पर पहुँच जाएँगे, उसी दिन स्वराज्य सूर्य का उदय होगा।

- **उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर इब्राहिम अली के चरित्र पर टिप्पणी करें ।**

टिप्पणी की परख, मेरी ओर से

- *चरित्र पर प्रकाश डालनेवाले संवादों का विश्लेषण किया है।*
- *चरित्र की विशेषता समझी है।*
- *विशेषताओं के आधार पर टिप्पणी लिखी है।*
- *चरित्र की विशेषताओं का समर्थन अपने दृष्टिकोण से किया है।*

नाटक का मंचन करें ।

मंचन की गतिविधियाँ

नाटक-वाचन

यह वैयक्तिक/दलीय हो सकता है। वाचन के द्‌वारा पूरे नाट्‌यदल कथा से तादात्म्य स्थापित करता है।

मंचन पूर्व चर्चा

नाटक की पृष्ठभूमि, तकनीकी क्षेत्र, पात्र आदि में सही अवधारणा उत्पन्न करने में यह चर्चा काम आती है। इससे कथापात्र के अनुरूप अभिनेता के चयन में ठीक दिशा मिल जाती है।

मंच की अवधारणा

प्रकाश, शब्द-विन्यास, मेक-अप, मंच-निर्माण आदि मंच के अनिवार्य अंग हैं, हालांकि कक्षा-प्रस्तुति के समय स्कूल में उपलब्ध सामग्रियों से काम चला सकते हैं।

सृजनपरता

नाटक की पटकथा, मंचन के लिए एक रूपरेखा मात्र है। निदेशक तथा अभिनेता कल्पना और क्षमता के अनुरूप मंचन को सृजनात्मक बनाएँ।

शब्दार्थ

अनुताप

नज़दीक	-	पास
लापरवाही	-	बेफ़िक्री
भला-चंगा	-	अच्छा-खासा
गुर्दा	-	Kidney
दम तोड़ना	-	मरना
सन्नाटा	-	सनसनाहट
आगोश	-	Embrace
एकबारगी	-	जल्दी
हमदर्दी	-	सहानुभूति
बेवकूफ़ी	-	मूर्खता
अनाप	-	बकवास
गद्दी	-	आसन
एकाएक	-	अचानक
कदकाठी	-	Healthy
सरेआम	-	खुलकर

मधुऋतु

भूली-सी	-	मार्गच्युत
मधुऋतु	-	वसंत ऋतु
कुटिया	-	छोटी झोंपड़ी
साथिन	-	सहेली
नीड़	-	घोंसला
झाड़खंड	-	जंगल
पतझड़	-	पत्तों का झड़ना
तिनका	-	सूखी घास का छोटा टुकड़ा
अंकुर	-	कली
झूलना	-	लहराना
लघुभव	-	लघुसंसार
खलेगा	-	बुरा लगेगा
सिहर भरी	-	रोमांच भरी
मलयानिल	-	मलयपर्वत की ओर से आनेवाली हवा
नलिन	-	कमल
जवाकुसुम	-	लाल रंग का फूल
लघुप्राची	-	पूर्व
जलधि	-	समुद्र
लांघकर	-	पारकर
निशि	-	रात
तुहिन	-	हिमकण

यह हमारा अधिकार है...

सूचना का अधिकार	-	Right to information
हक	-	अधिकार
संसद	-	Parliament
जवाबदेह	-	उत्तरदायी
दस्तावेज़	-	अभिलेख

जाँच	-	पूछताछ
इस्तेमाल	-	उपयोग
बालश्रम	-	Child Labour
सार्वजनिक सूचना अधिकारी	-	Public Information Officer
दस्ती	-	By hand
रोज़गार मंत्रालय	-	Ministry of Labour
उपलब्ध	-	प्राप्त
आदेश	-	Order
प्रावधान	-	तैयारी
दूरभाष	-	Telephone
कार्रवाई	-	Action
सड़क परिवहन कार्यालय	-	Road Transport Office

जुलूस

सठियाना	-	बुड्ढा होना
लौंडे-लफ़ँगे	-	चरित्रहीन छोकरे
ग़ोल	-	भीड़
ठठाकर	-	ज़ोर से
चट्टी	-	काठ की बनी चप्पल
ठिठया	-	संकोच
ठाठ	-	सुरक्षा
ठिकाना	-	जगह
धाक	-	प्रतिष्ठा
जल्लाद	-	निर्दय
हंटर	-	चाबुक
खुसुर-फुसुर	-	काना-फ़ूसी
इत्मीनान	-	विश्वास
दंगा-फ़साद	-	लड़ाई-झगड़ा
मक़सद	-	उद्देश्य
सवार	-	घुड़सवार
संगीन	-	Bionet
तैश में	-	क्रोध में
भाईबंद	-	स्वजन
तामील	-	आज्ञा का पालन
मंशा	-	इच्छा
महज़	-	केवल
क़ौम	-	वंश
पिट्ठू	-	अनुयायी
मलाल	-	दुख
टट्टू	-	छोटे कद का घोड़ा
बर्दाश्त करना	-	सहन करना
खैरियत	-	कुशल-मंगल
झंडी	-	ध्वज
साफ़ा	-	पगड़ी

इकाई दो

चाँद-सितारे

दोहे

ब्लैकः स्पर्श जहाँ भाषा बनता है...

आपकी आवाज़

चाँद और कवि

अधिगम उपलब्धियाँ

- मध्यकालीन संत कवि कबीरदास के दोहों की विशेषताओं पर चर्चा करके टिप्पणी लिखता है।
- कबीरदास के दोहों का आस्वादन करके टिप्पणी लिखता है।
- कबीरदास के दोहों की प्रासंगिकता पहचानकर दोहों का संकलन करता है।
- ICT की सहायता से दोहों का आलाप करता है।
- नैतिक बन जाता है।
- फिल्म देखकर मुद्दों के आधार पर फिल्म की विशेषताएँ परखता है।
- फिल्म समीक्षा पर चर्चा करके समीक्षा के सूचकों को पहचानता है।
- सूचकों के आधार पर फिल्म समीक्षा लिखता है।
- आलोचनात्मक ढंग से फिल्म देखता है।
- संपादकीय-लेखन पर चर्चा करके संपादकीय की विशेषताएँ प्रस्तुत करता है।
- समस्याओं पर प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए संपादकीय लिखता है।
- प्रगतिशील कविता की प्रवृत्तियों पर चर्चा करके कविता की विश्लेषणात्मक टिप्पणी लिखता है।
- कविता का आस्वादन करके टिप्पणी लिखता है।
- सपने को सच में बदलने की कोशिश करता है।

कबीरदास

जन्म	:	1398 ई. काशी
मृत्यु	:	1518 ई. मगहर
प्रमुख रचनाएँ	:	बीजक - साखी, सबद, रमैनी
विशेषताएँ	:	* भक्तिकाल के निर्गुण ज्ञानाश्रयी कवि।
		* एकेश्वरवादी कवि।
		* मानवता के प्रवर्तक।
		* संत एवं समाज सुधारक।
		* क्रांतिकारी भक्तकवि।
		* सच्चाई को सबसे श्रेष्ठ हथियार माननेवाले।
देन	:	जाति-पाँति, ऊँच-नीच तथा सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करके धार्मिक भेदभाव को दूर करने का आह्वान।

दोहा - दो पंक्तियोंवाली कविता। प्रत्येक पंक्ति में दो-दो चरण। हर **दोहा** अपने में पूर्ण। कबीरदास कवि बनने के लिए कविता नहीं लिखते थे। तत्कालीन अंधपरंपराओं से जनता को सचेत करने के लिए कबीर दोहों का गायन करते थे।

मन में मानवता को बनाए रखने की प्रेरणा देनेवाले कबीर के दोहे...

दोहे

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजौं आपना, मुझ-सा बुरा न कोय।।

लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूरि ।
चींटी ले शक्कर चली, हाथी के सिर धूरि।।

दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय।।

कामी क्रोधी लालची , इनते भक्ति न होय।
भक्ति करै कोइ सूरमा, जाति बरन कुल खोय।।

साई इतना दीजिए, जामें कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

'जो दिल खोजौं आपना मुझ-सा बुरा न कोय'- कबीर ने ऐसा क्यों कहा?

प्रभुता का महत्व समझाने के लिए कबीर ने किसका सहारा लिया है?

'दुख काहे होय'- इससे क्या तात्पर्य है?

सच्चा शूर कैसे बनता है?

अनुवर्ती कार्य

- **समानार्थी शब्द दोहे से ढूँढ़ लें।**

  कोई, शूर, संभाला, ढूँढ़ना, धूलि, वर्ण, स्मरण, क्यों, मिला

- **समान आशयवाला चरण दोहे से चुन लें।**
  - दूसरा कोई भूखा न रहे।
  - सुख में कोई स्मरण नहीं करता।
  - मैं बुरे लोगों को ढूँढ़ने निकला।
  - हाथी के सिर पर धूलि है।
  - काम, क्रोध और लालच से भक्ति नहीं होती।

- **व्याख्या करें**–*साईं इतना दीजिए, जामें कुटुंब समाय।*

  मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

- **ये तत्व किन-किन दोहों से संबंधित हैं?**
  - अहं दूर होने से महत्व बढ़ता है।
  - सुख और दुख में स्मरण करना है।
  - अपने को पहचाननेवाला सच्चा ज्ञानी है।
  - जीवन की शांति सादगी में है।
  - समभाव शूर का लक्षण है।

- *'जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय'*- **अपना विचार प्रकट करें।**
- *'कबीरदास की रचनाएँ कालजयी एवं प्रासंगिक हैं'*– **इस विचार से जुड़े दोहों का संकलन करके प्रस्तुत करें।**
- **कबीर के दोहों का आलाप करें।**

फिल्मी समीक्षा

फिल्म के सर्वांग विश्लेषण और मूल्यांकन फिल्मी समीक्षा है, अर्थात् फिल्म के गुण-दोष का विवेचन। अन्य दृश्य-माध्यमों की अपेक्षा सिनेमा में अनेक कलाओं का सम्मिलन है। निदेशन, अभिनय, गीत-संगीत, छायांकन, संपादन, पार्श्वसंगीत, नृत्य आदि अनेक कलाओं का संगम है सिनेमा। अतः एक कला-निपुण ही सच्चा फिल्मी समीक्षक बनेगा।

फिल्म की ओर...

➤ ब्लैक फिल्म देखें।

(फिल्म देखते वक्त इन मुद्दों पर बारीकी से ध्यान दें)

* पात्रों का अभिनय
* संवादों की प्रासंगिकता
* दृश्यों की विविधता
* कथा का प्रवाह

➤ फिल्म के आधार पर लिखें।

* सबसे आकर्षक दृश्य
* सबसे श्रेष्ठ अभिनेता
* सबसे हृदयस्पर्शी संवाद
* सबसे दर्दनाक दृश्य

➤ फिल्म के निम्नांकित अंगों के लिए गुणवत्ता के अनुसार ☆ दें (अधिकांश ☆ ☆ ☆ ☆ ☆)

* कथा
* अभिनय
* साज-सज्जा
* संपादन
* पटकथा
* छायांकन
* ध्वन्यांकन
* निदेशन

फिल्म से समीक्षा की ओर...

ब्लैक: स्पर्श जहाँ भाषा बनता है...

संजय लीला भंसाली द्‌वारा निदेशित 'ब्लैक' एक बेहद संवेदनशील फिल्म है। यह हेलन केल्लर और उसकी टीचर आनि सुलिवन के लिए अर्पित है।

फिल्म अपने शिक्षक देवराज सहाय की तलाश में भटकती मिशैल मैकनेली की संवेदना से शुरू होती है। आखिर उसे पता चलता है कि देवराज एक अस्पताल में है। अंधी मिशैल अपनी सुध-बुध खोकर उससे मिलने दौड़ती है तो अतीत जीवन की रील खुल जाती है। मिशैल अंधी, बहरी, गूँगी लड़की थी। अपनी अपंगता से पीड़ित मिशैल ज़िद्‌दी और आक्रामक है। उदास माँ-बाप उसे सिखाने और सुधारने के लिए बहरों एवं अंधों के विद्‌यालय के देवराज सहाय नामक अध्यापक को नियुक्त करते हैं। देवराज सहाय सनकी था और पियक्कड़ भी। मिशैल से देवराज का व्यवहार पहले कठोर था। पर धीरे-धीरे मिशैल को घर की दीवारों से बाहर निकालकर देवराज प्रकृति के अणु-अणु से उसका परिचय कराता है। मिशैल सुधरने लगी। बोलने-सुनने में एक हद तक दक्षता प्राप्त करनेवाली मिशैल को देवराज ने स्कूल में भर्ती कराई। मिशैल को स्नातक बनाना उसका सपना था।

परंतु देवराज जब समझता है कि मिशैल का लगाव नया मोड़ लेता है तब वह कहीं खो जाता है। अब बारह वर्षों के बाद विस्मृति रोग से पीड़ित देवराज उसे पहचानने में असफल रहा। शिक्षक की वर्तमान अवस्था से मिशैल टूट गई। लेकिन

पुरानी यादें दिलाकर देवराज की खोई स्मृतियों को जगाने में एक बार मिशैल सफल हो जाती है। इस आस्था के बल पर वह देवराज का हाथ थामकर आगे निकलती है।

ब्लैक की पटकथा मानवीय अनुभूतियों के ताने-बाने में बुनी है। अपंग जीवन की त्रासदी की मर्म-व्यथा दर्शकों के दिल को कचोटती है। भवानी अय्यर, प्रकाश कपाड़िया और संजय लीला भंसाली की पटकथा गतिशील एवं मार्मिक है। फिल्म के संवाद पात्र, भाव एवं परिवेश के अनुकूल हैं। रवि के चंद्रन ने शिमला के सुंदर शीतल वातावरण में इस फिल्म का छायांकन किया है। फिल्म का हरेक 'शॉट' आकर्षक है। ध्वन्यांकन रसूल पूक्कुट्टी का है, जो स्तरीय है। बेला सहगल ने अत्यंत सतर्कता से फिल्म का संपादन-कार्य किया है। एक मात्र गीत ने प्रसंगोचित ताल-लय प्रदान किया है। पार्श्वसंगीत बेहतरीन है।

फिल्म में अमिताभ बच्चन, राणी मुखर्जी और आयशा कपूर की महत्वपूर्ण भूमिका है। देवराज की कठोरता, स्निग्धता, आस्था और दिशाहीनता को बच्चन ने अनन्य बना दिया। मिशैल की भूमिका निभानेवाली राणी मुखर्जी ने अपंग जीवन की मर्म व्यथा को स्मरणीय बना दिया। अपंग जीवन की दुविधा को राणी मुखर्जी ने नई भावभूमि प्रदान की। छोटी मिशैल की भूमिका में आयशा कपूर ने जादू का काम किया, एक अपंग बालिका की विडंबना का सही प्रस्तुतीकरण। एक फिल्म की स्तरीयता का प्रथम अधिकार निदेशक का है। फिल्म के संपादन, छायांकन आदि हरेक क्षेत्र में निदेशक का संस्पर्श है। फिल्म की चरमसीमा सकरुण, लेकिन सारपूर्ण है। अपनी संपूर्ण क्षमता समेटते हुए निदेशक संजय लीला भंसाली ने दर्शकों के दिल पर ब्लैक की प्रतिष्ठा की है। मनोरंजन-प्रधान हिंदी फिल्म के इतिहास में मनोविकारों की यह आर्द्र अभिव्यक्ति बिलकुल एक मील पत्थर है।

अनुवर्ती कार्य

- **समीक्षा में किन-किन बिंदुओं की चर्चा की गई है?**
- **किसी एक मनपसंद फिल्म की समीक्षा लिखें।**

फिल्म समीक्षा की परख, मेरी ओर से

- *फिल्म का संक्षिप्त परिचय दिया है।*
- *अभिनय की खूबियाँ/कमियाँ बताई हैं।*
- *निदेशक की क्षमता को अंकित किया है।*
- *फिल्म के अन्य बिंदुओं की (पटकथा, संवाद-योजना, छायांकन, ध्वन्यांकन, संपादन, गीत आदि) चर्चा की है।*
- *अपने विचारों का समर्थन किया है।*

- **मान लें, ब्लैक फिल्म थियटर में 100 दिन पूरी करते वक्त पोस्टर में यह अनुशीर्षक (Caption) निकलता है।**

संजय लीला भंसाली के निदेशन में अमिताभ बच्चन और राणी मुखर्जी के अभिनय-जीवन की अनमोल प्रस्तुति

'ब्लैक'

101 वें दिन की ओर...

पोस्टर में छपने के लिए इसी प्रकार के विभिन्न अनुशीर्षक लिखें।

संपादकीय

संपादकीय समाचार पत्र या अन्य किसी पत्रिका का अभिमत प्रकट करनेवाला एक लेख है जो मुख्य रूप से संपादक द्वारा लिखा जाता है। यह सहज एवं स्वाभाविक होता है। दरअसल संपादकीय जनमत को अधिकारियों तक पहुँचाने का सफल प्रयत्न करता है। संपादकीय विषय केंद्रित या समस्या केंद्रित हो। समकालीन घटनाओं और समस्याओं पर संपादकीय लिखा जाता है।

जनता द्वारा जनता के लिए की जानेवाली जनता की राज–जनतंत्र–में जब जनता अधिकारों से वंचित हो जाती है तब उसकी आवाज़ बनकर संपादकीय....

आपकी आवाज़

दैनिक जागरण

सोमवार 19 अगस्त 2013

बढ़ती बीमारियाँ

राजधानी में डेंगू और मलेरिया के मामलों का बढ़ना गंभीर चिंता का विषय है। ऐसे समय में जबकि कुछ राज्यों में मलेरिया विभाग समाप्त कर दिया गया है, दिल्ली में मलेरिया फैलना निःसंदेह किसी लापरवाही की ओर संकेत करता है। हर वर्ष बरसात में बीमारियों का फैलना इस बात का प्रमाण है कि इसके स्थाई निवारण के लिए गंभीर प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। स्थिति की गंभीरता का अंदाज़ा इसीसे लगाया जा सकता है कि अकेले यमुनापार इलाके में मलेरिया के 29 मामले सामने आए हैं। हर साल सरकार इन बीमारियों की रोकथाम के लिए उपाय करने की बात कहती है, लेकिन बीमारियों पर प्रभावी तरीके से रोक नहीं लगाई जा सकी है। लोगों के मलेरिया की चपेट में आने के बाद नगर निगम ने पीड़ित लोगों के घरों व आसपास के इलाकों में दवा का छिड़काव कराने का दावा किया है, लेकिन एहतियाती कदम अगर पहले उठाए जाते तो ऐसे हालात से बचा जा सकता था।

बीमारियाँ कैसे जन्म लेती हैं ?

इस बात से कतई इनकार नहीं किया जा सकता कि बारिश के दिनों में बड़ी संख्या में मच्छर पैदा होना एक सामान्य बात है, जिसके परिणामस्वरूप मलेरिया व डेंगु जैसी बीमारियाँ जन्म लेती हैं। लेकिन मच्छरों के पैदा होने से रोकने के लिए यह आवश्यक है कि सरकारी स्तर पर इसके लिए अविलंब गंभीर प्रयास किए जाएँ। मलेरिया के बढ़ते मामले को रोकने की ज़िम्मेदारी सरकार व स्थानीय प्रशासन की अवश्य है लेकिन दिल्लीवासियों को भी इस कार्य में पूरी तरह सहयोग करना चाहिए।

बीमारियाँ कैसे फैलती हैं?

अनुवर्ती कार्य

चर्चा करें - *संपादकीय लेखन कैसे?*

चर्चा बिंदु :
- विषय का चुनाव
- विषय के ज़रूरी तथ्य
- समस्या-प्रस्तुति का ढाँचा
- समर्थन का तरीका
- संपादकीय भाषा
- शीर्षक

(सहायक संकेत–परिशिष्ट, पृष्ठ संख्या- 110-111, संपादकीय)

➤ **'बढ़ती बीमारियाँ'** में-
- किस विषय की चर्चा हुई है?
- विषय-प्रस्तुति के लिए कौन-कौन से तथ्य जुटाए हैं?
- समस्या का समर्थन करने के लिए क्या-क्या तर्क उठाए हैं?
- समस्या प्रस्तुत करने के लिए कौन-सी भाषा-शैली का प्रयोग किया है?
- संपादकीय का शीर्षक कैसे चुना है?

➤ **यह रपट पढ़ें**

केरलः सड़क हादसे में 2 की मौत, 12 घायल

कोल्लम : कोल्लम जिले में एक मिनी बस के पलटने से 2 लोगों की मौत हो गई और 12 लोग घायल हो गए। इनमें तीन लोगों का हाल गंभीर है। जिलाधीश ने बताया कि पुनलूर् के पास तेनमला में हुए इस हादसे में एक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरे ने अस्पताल में पहुँचने पर दम तोड़ दिया। मिनी बस तेनमला से कोल्लम जा रही थी। पुलिस और प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक बस काफी तेज़ गति से जा रही थी। इसी दौरान चालक अपना नियंत्रण खो बैठा और बस पेड़ से टकराकर पलट गई।

➤ **रपट के लिए एक नया शीर्षक लिखें।**

शीर्षक की परख, मेरी ओर से

- *पढ़ने को प्रेरित करता है।*
- *केंद्र आशय को उद्दीप्त करता है।*
- *भ्रमात्मकता से रहित है।*

➤ **निम्नलिखित बिंदुओं की सहायता से 'बढ़ती सड़क दुर्घटनाएँ' पर संपादकीय तैयार करें।**

- कच्ची-टूटी सड़कें
- गाड़ियों की बढ़ती संख्या
- ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन
- नशीली चीज़ों का उपयोग
- नियमों का सख़्त पालन
- जागरण-कार्यक्रम

संपादकीय की परख, मेरी ओर से

- *तथ्यों की सटीक प्रस्तुति हुई है।*
- *समस्या के विभिन्न कारण प्रस्तुत किए हैं।*
- *समस्या-समाधान के सुझाव प्रस्तुत किए हैं।*
- *अनावश्यक विस्तार नहीं है।*
- *आकर्षक शीर्षक है।*

रामधारी सिंह दिनकर

जन्म	:	23 सितंबर 1908, सिमरिया, बिहार
मृत्यु	:	24 अप्रैल 1974
प्रमुख रचनाएँ	:	महाकाव्य - कुरुक्षेत्र
		खंडकाव्य - उर्वशी, रेणुका, हुँकार, इतिहास के आँसु, नील कुसुम, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा,
		निबंध - संस्कृति के चार अध्याय
पुरस्कार	:	'उर्वशी' के लिए 1972 का ज्ञानपीठ पुरस्कार
विशेषताएँ	:	* साहित्य तथा संस्कृति के गंभीर अध्येता तथा व्याख्याता।
		* छायावाद से प्रगतिवाद की ओर तथा प्रगतिवाद से राष्ट्रवाद की ओर अग्रसर कवि।
		* भाषा में ओज, शक्ति, पौरुष, मस्ती और उमंग।
		* रचनाओं में प्रणय की राग और क्रांति की आग।
देन	:	जनचेतना के वाहक।

छायावादी काव्य की प्रतिक्रिया में प्रगतिशील काव्य निकल पड़े। जब कवि कल्पना के रंगीन आकाश में उड़ रहा था और वास्तविकता की धरती को भूल गया था, तब परिस्थितियों ने उसे यथार्थवादी बनाया। रामधारीसिंह दिनकर को राष्ट्रीय एवं साँस्कृतिक विचारधारा के कवि कह सकते हैं। उन्होंने काव्य को यथार्थ के धरातल पर खड़ा करने का प्रयास किया। **चाँद और कवि** कविता में दिनकर कहते हैं कि कवि-कलाकारों के सपने ही यथार्थ का रूप धारण करते हैं और उन सपनों की नींव पर ही समाज का भविष्य खड़ा किया जाता है।

प्रगति की नई राहें ढूँढ़नेवाली दिनकर की कविता...

चाँद और कवि

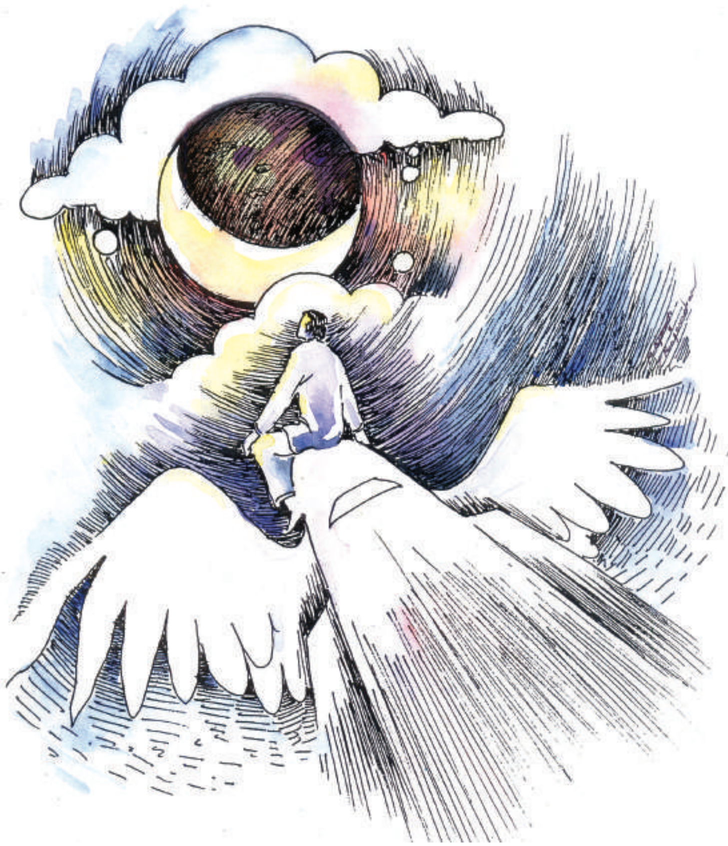

'आदमी भी क्या अनोखा जीव होता है', चाँद क्यों ऐसा कह रहा है?

रात यों कहने लगा मुझसे गगन का चाँद,
आदमी भी क्या अनोखा जीव होता है!
उलझनें अपनी बनाकर आप ही फ़ँसता,
और फिर बेचैन हो जगता न सोता है।

जानता है तू कि मैं कितना पुराना हूँ?
मैं चुका हूँ देख मनु को जनमते-मरते?
और लाखों बार तुझ-से पागलों को भी
चाँदनी में बैठ स्वप्नों पर सही करते।

आदमी का स्वप्न? है वह बुलबुला जल का,
आज बनता और कल फिर फूट जाता है;
किंतु, तो भी धन्य; ठहरा आदमी ही तो!
बुलबुलों से खेलता, कविता बनाता है।

'आदमी का स्वप्न जल का बुलबुला है' - अपना मत प्रकट करें।

मैं न बोला, किंतु, मेरी रागिनी बोली,
चाँद! फिर से देख, मुझको जानता है तू?
स्वप्न मेरे बुलबुले हैं? है यही पानी?
आग को भी क्या नहीं पहचानता है तू!

कवि के बदले रागिनी क्यों बोल उठी?

मैं न वह जो स्वप्न पर केवल सही करते,
आग में उसको गला लोहा बनाती हूँ;
और उसपर नींव रखती हूँ नए घर की,
इस तरह, दीवार फ़ौलादी उठाती हूँ।

मनु नहीं मनु-पुत्र है यह सामने, जिसकी,
कल्पना की जीभ में भी धार होती है,
बाण ही होते विचारों के नहीं केवल,
स्वप्न के भी हाथ में तलवार होती है।

मनु-पुत्र की कल्पना कैसी है?

स्वर्ग के सम्राट को जाकर खबर कर दे,
रोज़ ही आकाश चढ़ते जा रहे हैं ये;
रोकिए, जैसे बने, इन स्वप्नवालों को,
स्वर्ग की ही ओर बढ़ते आ रहे हैं ये।

स्वर्ग का सम्राट कौन हो सकता है?

अनुवर्ती कार्य

➤ **समान भाववाली पंक्ति चुनकर लिखें।**

- स्वप्नों को आग में गलाकर लोहा बनाता है।
- मनु पुत्र के कल्पना भरे सपने तीखे होते हैं।
- चाँद इतना पुराना है कि उसने मनु का जन्म और मरण देखा है।
- आदमी स्वयं उलझनें बनाकर चैन खो बैठता है।

➤ **विश्लेषणात्मक टिप्पणी लिखें।**

मनु नहीं मनु-पुत्र है यह सामने, जिसकी,
कल्पना की जीभ में भी धार होती है,
बाण ही होते विचारों के नहीं केवल,
स्वप्न के भी हाथ में तलवार होती है।

विश्लेषणात्मक टिप्पणी की परख, मेरी ओर से

- *पंक्तियों का विश्लेषण किया है।*
- *अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया है।*
- *पंक्तियों के विचार से अपने विचार की तुलना की है।*

➤ **कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।**

➤ **निम्नांकित कथन पर अपना विचार प्रस्तुत करें**

"महान सपने देखनेवालों के महान सपने हमेशा पूरे होते हैं।"

- डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम

शब्दार्थ

कबीर के दोहे

खोजौ	-	खोजता है
आपना	-	अपना
देखन	-	देखने
लघुता	-	सादगी
दूरि	-	दूर
प्रभु	-	अहं का भाव
धूरि	-	धूलि
सुमिरन	-	स्मरण
करै	-	करता है
कोय	-	कोई
काहे	-	क्यों
होय	-	होता है
इनते	-	इनसे
सूरमा	-	शूर
बरन	-	वर्ण
खोय	-	खोकर
साई	-	स्वामी
जामें	-	जिसमें
समाय	-	सँभाला जा सके ।

ब्लैक: स्पर्श जहाँ भाषा बन जाता है

सुध-बुध खोना	-	सबकुछ भूलना
रील खुल जाना	-	तहें खुलना
अपंगता	-	विकलांगता
जिद्दी	-	हठी
सनकी	-	विचित्र स्वभाव रखनेवाला
पियक्कड़	-	शराबी
दक्षता	-	क्षमता
भर्ती	-	दाखिल
कचोटना	-	चुभना
बेहतरीन	-	सबसे श्रेष्ठ
स्निग्धता	-	चिकनापन
आस्था	-	विश्वास
स्तरीयता	-	श्रेष्ठता

संपादकीय

मामला	-	Matter
लापरवाही	-	असावधानी
अंदाज़ा	-	अनुमान
चपेट में आना	-	To be threatened
छिड़काव	-	छिड़कन
एहतियाती	-	सावधानी
कतई	-	बिलकुल

चाँद और कवि

अनोखा	-	अपूर्व
उलझनें	-	मुश्किलें
बेचैन	-	चिंतित
गलाना	-	तपाना
रागिनी	-	सस्वर गीत
फ़ौलादी	-	सुदृढ़
कल्पना की जीभ	-	कल्पना की अभिव्यक्ति
धार	-	तेज़

इकाई तीन

जान-पहचान

आनंद की फुलझड़ियाँ
पत्थर की बैंच
सृजन की ओर...
दुख

अधिगम उपलब्धियाँ

- निबंध का आशयग्रहण करके घटनाओं का वर्गीकरण करता है।
- कल्पना द्‌वारा घटनाओं का विधांतरण करता है।
- जीवन और प्रकृति के प्रति सकारात्मक बनता है।
- बीसवीं सदी के अंतिम दशक की कविता का आस्वादन करके टिप्पणी लिखता है।
- चित्रवाचन करके संकेतों के आधार पर लेख लिखता है।
- अपना स्वत्व खोजता है।
- अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करता है।
- वर्तमान कहानी की संवेदना एवं शैली पहचानकर कहानी के प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- कहानी की विवेचना करके टिप्पणी लिखता है।
- वाद-विवाद में अपना मत तर्कसंगत प्रस्तुत करता है और आलेख तैयार करता है।
- संवेदनशील बनता है।

अनंत गोपाल शेवड़े

जन्म	:	1911 ई.
मृत्यु	:	1979 ई.
प्रमुख रचनाएँ	:	निशागीत, ज्वालामुखी, मंगला, तीसरी भूख, कोरे कागज़, दूर के ढोल
विशेषताएँ	:	* प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के मुख्य सचिव * अहिंदी भाषी हिंदी लेखक।
देन	:	हिंदी भाषा को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित करने में योगदान

हिंदी भाषा को गढ़ने तथा परिमार्जित करने में निबंध का विशिष्ट योगदान है। भारतेंदु युग में हिंदी निबंध का श्रीगणेश हुआ था। द्‌विवेदी युग में निबंध का पर्याप्त विकास हुआ। अहिंदी भाषी हिंदी लेखकों के निबंधों ने हिंदी साहित्य को समृद्‌ध किया। ***आनंद की फुलझड़ियाँ*** में भिन्न-भिन्न घटनाओं के माध्यम से समाज का चित्र प्रस्तुत करने में लेखक सफल हुए हैं।

जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखनेवाले अनंत गोपाल शेवड़े का निबंध.....

आनंद की फुलझड़ियाँ

एक बूढ़ा आदमी, जिसके बाल सफ़ेद हो गए थे, ज़मीन खोद रहा था। एक नौजवान ने, जो वहाँ से गुज़र रहा था, उस बुजुर्ग को परिश्रम करते देख पूछा, "बाबा यह क्या कर रहे हो?"

"आम की गुठलियाँ बो रहा हूँ" बूढ़े ने कहा।

"इस उम्र में? इसके फल कब खाओगे, बाबा?"

"मैं फल नहीं खा सकता तो क्या हुआ बेटा, तुम तो खा सकोगे? मेरे-तुम्हारे नाती-पोते तो खाएँगे? देखो, वह अमराई मेरे दादा ने लगाई थी तो उसके फल मैंने खाए। इसके फल मेरे नाती-पोते खाएँगे।"

हमारे पूर्वजों की इसी मनोवृत्ति का फल है, जो हम जगह-जगह अमराई देखते हैं। अपने स्वार्थी जीवन से ऊँचे उठकर दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाने का यह कैसा सुंदर स्वभाव है। निस्संदेह उस बूढ़े का जीवन एक परम सात्विक आनंद की दीप्ति से जगमगा उठा होगा और उसकी मृत्यु बहुत शांत और कष्टहीन हुई होगी। हम लोग सभी यदि इस वृत्ति को हृदयंगम कर लें तो इस दुनिया में अधिक आनंद की सृष्टि हो सकेगी, इसमें कोई शक नहीं। हमारा जीवन सच्चे सुख के प्रकाश से आलोकित हो उठेगा।

हमारे पूर्वजों की इसी मनोवृत्ति का फल है, जो हम जगह-जगह अमराई देखते हैं। कौन-सी मनोवृत्ति?

एक वृद्ध संभ्रांत महिला रेलगाड़ी से सफ़र कर रही थी। वे खिड़की के पास बैठकर, बीच-बीच में, अपनी मुट्ठी से कुछ चीज़ बाहर फेंकती जा रही थीं।

एक सहयात्री ने, जो यह देख रहा था, पूछा, "यह आप क्या कर रही हैं?" उस महिला ने जवाब दिया, "ये सुंदर फलों और फूलों के बीज हैं। मैं इन्हें इस उम्मीद से फेंक रही हूँ कि इनमें से कुछ भी अगर जड़ पकड़ लेंगे तो लोगों का इससे कुछ फ़ायदा होगा। पता नहीं मैं इस रास्ते से फिर गुज़रूँ या न गुज़रूँ, इसलिए क्यों न मैं इस संधि का उपयोग कर लूँ?"

दुनिया रहने लायक कैसे बनी?

आजकल के ज़माने की रुपए और शिलिंगवाली स्वार्थी तहजीब के बावजूद दुनिया में ऐसे व्यक्ति हैं, इसीलिए तो दुनिया रहने लायक बनी है। भौतिकवाद और भोग-विलास की हाय-हाय से परे रहनेवाले निःस्वार्थी और आदर्श-प्रिय लोग न होते तो हम कब के रसातल को पहुँच गए होते। ऐसे भी व्यक्ति हैं, जो इस ज़माने के अंधकार में भी आनंद की फुलझड़ियों से प्रकाश फैलाते रहते हैं, जिन्हें देखकर हम मानव जाति के भविष्य पर श्रद्धा और विश्वास कर सकते हैं।

अमेरिका के प्रेसीडेंट बेंजमिन फ्रैंकलीन के बारे में एक सुंदर बात सुनी जाती है—उनके पास एक गरीब विद्यार्थी मदद माँगने के लिए आया। उसे उन्होंने 20 डॉलर दिए। वे तो यह छोटी रक़म देकर भूल गए। लेकिन वह विद्यार्थी इस उपकार को न भूला। जब उसके दिन फिरे तब यह 20 डॉलर लौटाने के लिए फ्रैंकलीन के पास गया। फ्रैंकलीन ने कहा, "मुझे याद तो नहीं है कि मैंने यह रक़म आपको कब दी। लेकिन खैर, आप इसे अपने ही पास रखिए और जब आपके पास

कोई ऐसा ही ज़रूरतमंद आए तो उसे यह दे दीजिए।" उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया। कहते हैं, आज भी वह रक़म अमेरिका में ज़रूरतमंदों के हाथों में घूम रही है। कितनी अच्छी बात है!

जरूरतमंद कौन-कौन हो सकता है?

रुपया कमाना सबके हाथ की बात नहीं है, न शिक्षा पाकर डिग्रियाँ हासिल करना सबकी पहुँच में है, लेकिन हम सब चाहें तो आनंद और सुख की रश्मियाँ बिखेरकर दुनिया के दुख को कुछ-न-कुछ हल्का ज़रूर कर सकते हैं और जिन लोगों से हमारा संबंध है, उनके जीवन में कुछ-न-कुछ प्रसन्नता तो ज़रूर ही ला सकते हैं। लड़ाई, गरीबी, महँगाई और गुलामी से हमारा जीवन तो वैसे ही मुसीबतों से भरा पड़ा है। फिर भी हम उसमें कुछ सुख और आह्लाद फैलाकर ज़िंदगी की लड़ाई को सहने लायक और जीवन को जीने लायक तो बना ही सकते हैं, बशर्ते हम उसका ज़रा खयाल रखें। काम बिलकुल मुश्किल नहीं है। हमें सिर्फ ज़रा ध्यान देने की ज़रूरत है और उसका नतीजा? वह तो हम फौरन देख सकेंगे। अगर जादू की तरह असर न हुआ तो फिर कहिए।

अपने काम से एक बार मुंबई जा रहा था। लड़ाई के कारण कंपनी ने गाड़ियों की संख्या कम कर दी थी इसलिए भीड़ खूब रहती थी। टिकट लेने के लिए बाकायदा छीना-झपटी होती थी। खिड़की के पास भीड़ लगी हुई थी। टिकट बाबू बेचारे परेशानी से टिकट बनाते जाते थे, लेकिन उस छोटी-सी खिड़की में न जाने

टिकट बाबू की परेशानी का कारण क्या था ?

कितने हाथ घुस रहे थे और न जाने कितनी आवाज़ें आ रही थीं– दो टिकट अमरावती। बाबू, साढ़े तीन आकोला, जल्दी देना। अरे गाड़ी तो छूटी जा रही है। बाबू नासिक का एक टिकट...

'ठहरो, ठहरो।' टिकट बाबू कहते जा रहे थे और पसीना पोंछते-पोंछते एक-एक आदमी को निपटाते जा रहे थे और उधर गाड़ी आने का वक्त हो रहा था। लोगों का धीरज छूटने लगा। तानेकशी शुरू हुई, 'अरे भैया, दक्षिणा चढ़ाओ तब जल्दी टिकट मिलेगा।' एक बोले! 'बड़ी इनएफीशियेंसी है', एक सूट पहने हुए साहब ने फर्माया। 'हम स्टेशन मास्टर से शिकायत करें', तीसरे ने धमकाया।

लेकिन टिकट बाबू इन बातों को सुना-अनसुना करके अपना काम करते रहे। कभी-कभी नाराज़ हो जाते तो अपनी नाराज़ी, जो ताने कस रहे थे, उन्हें टिकट देर से देकर निकालने की कोशिश करने लगे। मैं पास ही खड़ा था, टिकट लेना बाकी ही था। मैंने अपने पास के मुसाफ़िरों से धीरे-से कहा, "ज़रा ठहरिए, भाई साहब! देखिए बेचारा बाबू कितना फँस रहा है। इस लड़ाई ने रेलवे कर्मचारियों पर तो बेहद काम का बोझा डाल दिया है, जिसमें छोटे-छोटे क्लर्कों का तो मरण है।"

टिकट बाबू पर इन शब्दों का अजीब असर पड़ा। क्यों ?

उस गरीब टिकट बाबू पर इन शब्दों का अजीब असर पड़ा। "कुछ पूछिए मत बाबू साहब।" उसने सिर पर से टोपी उतारते हुए कहा, "ऐसी पिसाई हो रही है कि हिसाब नहीं। कंपनी से स्टाफ बढ़ाने के लिए कहा तो 'न' में जवाब आया। महँगाई-भत्ते के लिए दरख्वास्त

दी तो कहते हैं-विचार करेंगे। बड़ी मुसीबत है। खैर! आपको कहाँ जाना है बाबू साहब?"

मुझे उसने फौरन टिकट दे दिया और उसी हो-हल्ले में पूछा, "आप यहाँ रहते हैं?"

मैंने कहा, "हाँ"।

"लौटकर ज़रूर दर्शन दीजिएगा।" उसने वहीं से नमस्कार करते हुए कहा और उत्साह से खटाखट टिकट काटकर भीड़ छाँटना शुरू कर दिया।

छोटी-सी घटना है, लेकिन एक सबक सिखाती है। बात तो सच थी कि टिकट बाबू का काम बहुत बढ़ गया था। युद्ध के कारण सभी महकमों का यही हाल है। जिन्होंने ताने कसे उनके खिलाफ उसका दिल कड़ा हो गया। मैंने सहानुभूति दर्शाई तो उसका हृदय मोम-सा हो गया और उसने केवल मुझे ही नहीं बल्कि दूसरों को भी जल्दी-जल्दी टिकट देना शुरू किया। सहानुभूति के उन थोड़े से शब्दों ने उसे नई ताकत दी।

टिकट बाबू को नई ताकत कैसे मिली?

मेरे शब्द महज उसे खुश करने के लिए नहीं कहे गए थे। सच्चे हृदय से निकले थे और वह बाबू भी उस सच्चाई को समझ गया। उसपर उनका तुरंत असर हुआ। हो सकता है, उसके मन को उन शब्दों से कुछ सांत्वना मिली हो और मुझे क्या कीमत देनी पड़ी? कुछ नहीं।

एक बार मैं बैंक में अपना हिसाब खोलने के लिए गया। क्लर्क मुझसे सवाल पूछता जाता था और पास बुक में दर्ज करता जाता था। मैंने देखा, उसके

अक्षर दरअसल बहुत अच्छे हैं। मैंने फौरन कहा, "ज़रा पास बुक दिखाइए तो, आपकी लिपि बहुत सुंदर दिखती है।" और उसे नज़दीक से देखकर मैंने कुछ मन ही मन और ज़ोर से कहा, "ब्यूटीफुल"! उस क्लर्क का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। बैंक के रूखे आँकड़ों से माथापच्ची करते-करते उसका तमाम दिन बीतता है। काम के उन नीरस घंटों में उसे आनंद का अनुभव नहीं हुआ था। कुछ अभिमान से और कुछ विनय से वह धीरे से बोला, "जी हाँ, मैनेजर साहब ने भी इस बारे में मेरी तारीफ़ की है, हाईस्कूल में मुझे हस्तलिपि के लिए पहला पारितोषिक भी मिला था।"

"कोई आश्चर्य की बात नहीं।" मैंने कहा।

उसका वह आनंद से खिला हुआ चेहरा अब भी मेरी आँखों के सामने है। हो सकता है कि उस दिन शाम को उसने अपने दोस्तों में इस छोटी-सी घटना का ज़िक्र किया हो या अपनी पत्नी से यह बात अभिमान के साथ कही हो। उसमें एक गुण था। उसकी सच्चे मन से दाद दी गई, इसलिए वह खुश हो गया। शायद दूसरे क्लर्क उसके इस गुण के कारण उससे जलते हों और उन्होंने कभी प्रशंसा का एक शब्द भी न कहा हो, लेकिन आज तो उसके गुण की कद्र की गई।

लेखक को क्यों प्रसन्नता महसूस हुई?

मुझे भी बड़ी प्रसन्नता हुई कि मैं उन थोड़े-से शब्दों द्वारा उस क्लर्क के जीवन में किंचितमात्र भी क्यों न हो, सुख तो पहुँचा सका।

अनुवर्ती कार्य

➤ **पात्र और घटनाओं का मिलान करें।**

घटना	पात्र
यात्रियों को टिकट देना	बूढ़ा आदमी
सुंदर लिपि में लिखना	संभ्रांत महिला
रेलगाड़ी से बीज फेंकना	फ्रैंकलीन
आम की गुठलियाँ बोना	टिकट बाबू
विद्‌यार्थी की मदद करना	बैंक का क्लर्क

➤ **घटना का संक्षेपण करें।**

एक बूढ़ा आदमी, जिसके बाल सफ़ेद हो गए थे, ... इसके फल मेरे नाती-पोते खाएँगे।

संक्षेपण की परख, मेरी ओर से

- मुख्य आशयों का चयन किया है।
- अनावश्यक विस्तार को छोड़ा है।
- अपनी भाषा को स्वीकारा है।
- उचित शीर्षक दिया है।

➤ **संभ्रांत महिला रेलगाड़ी से कुछ चीज़ें बाहर फेंकती जा रही है। तब सहयात्री और संभ्रांत महिला के बीच का संभावित वार्तालाप तैयार करें।**

वार्तालाप की परख, मेरी ओर से

- प्रसंगानुसार अभिव्यक्ति है।
- स्वाभाविक शुरुआत है।
- प्रश्नोत्तर शैली है।
- प्रवाहमयता है।
- कल्पना है।
- स्वाभाविक अंत है।

➤ **मान लें, रेलगाड़ी में सफ़र करनेवाली वृद्ध संभ्रांत महिला की नज़र डिब्बे में चिपके हुए विज्ञापन पर पड़ती है जो रक्तदान के महत्व को रेखांकित करता है। संकेतों के सहारे वह विज्ञापन तैयार करें।**

- समभाव
- सहिष्णुता
- मानव-प्रेम
- जीवनदान

विज्ञापन की परख, मेरी ओर से

- सपाट भाषा का प्रयोग है।
- मुहावरेदार/नारेबाज़ी शैली है।
- लाभ और गुणवत्ता का ज़िक्र है।
- रूपरेखा आकर्षक है।

➤ *'आज भी वह रक़म अमेरिका में ज़रूरतमंदों के हाथों में घूम रही है'*- **मान लें, वह रक़म अपने वर्तमान अनुभवों का आत्मकथा के रूप में ज़िक्र करती है। वह आत्मकथांश लिखें।**

- समाज की पूँजी अमीरों के हाथ में।
- पूँजी का समुचित वितरण से समाज का संतुलन।
- ज़रूरतमंद के हाथों में पूँजी का सौगुना मूल्य।

चंद्रकांत देवताले

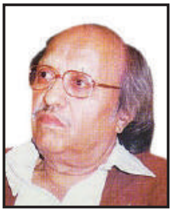

जन्म	:	7 नवंबर 1936, बैतूल जिला, मध्यप्रदेश
रचनाएँ	:	हड्डियों में छिपा ज्वर, दीवारों पर खून से, लकडबग्घा हँस रहा है, रोशनी के मैदान की तरफ, भूखंड तप रहा है, आग हर चीज़ में बताई गई थी, पत्थर की बेंच, उसके सपने, इतनी पत्थर रोशनी, उजाड़ में संग्रहालय, पत्थर फेंक रहा हूँ, आकाश का जात बना भइया।
पुरस्कार	:	मुक्तिबोध फैलोशिप, माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, मध्यप्रदेश शासन का शिखर सम्मान, सृजन भारती सम्मान, कविता समय पुरस्कार।
विशेषताएँ	:	* समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर। * पुरानी पीढ़ी के अग्रणी कवि। * नूतन विचारधारा के वाहक। * वर्तमान विद्रूपताओं पर कठोर प्रहार करनेवाला। * समय की सच्चाई के चतुर-चितेरे।
देन	:	कविता में पीढ़ियों का सुख-दुख, प्रेम-विरह की संवेदनशील स्मृतियों और भविष्य की आशंकाओं का अंकन।
संप्रति	:	पत्रकारिता एवं स्वतंत्र लेखन में व्यस्त
ई-मेल	:	devendra2508@rediffmail.com

समकालीन कविता बेकसूर आदमी की आवाज़ है। समकालीन कवि शांत और संयत स्वर में मानवीय संवेदना को पेश करता है। उसके लिए कवि सपाट बयानी का सहारा लेता है। ***पत्थर की बैंच*** कविता में वर्तमान पीढ़ी की पुकार को देवताले ने वाणी दी है।

समय के दस्तक को आशंका भरी आवाज़ में बुलंद करनेवाली देवताले की कविता....

पत्थर की बैंच

पत्थर की बैंच
जिसपर रोता हुआ बच्चा
बिस्कुट कुतरते चुप हो रहा है

जिसपर एक थका युवक
अपने कुचले हुए सपनों को सहला रहा है

जिसपर हाथों से आँखें ढाँप
एक रिटायर्ड बूढ़ा भर दोपहरी सो रहा है

जिसपर वे दोनों
ज़िंदगी के सपने बुन रहे हैं

पत्थर की बैंच
जिसपर अंकित हैं आँसू, थकान
विश्राम और प्रेम की स्मृतियाँ

इस पत्थर की बैंच के लिए भी
शुरू हो सकता है किसी दिन
हत्याओं का सिलसिला
इसे उखाड़ कर ले जाया
अथवा तोड़ा भी जा सकता है
पता नहीं सबसे पहले कौन आसीन हुआ होगा
इस पत्थर की बैंच पर!

पत्थर की बैंच पर कौन-कौन बैठे हैं? उनकी संवेदनाएँ क्या-क्या हैं?

सबों ने पत्थर की बैंच का सहारा लिया। क्यों?

पत्थर की बैंच किसका प्रतीक है?

अनुवर्ती कार्य

➤ **कविता पढ़कर भरें-**

जैसे-बच्चा रो रहा है, फिर भी बिस्कुट कुतरता है।

* युवक थका हुआ है, फिर भी ...
* बूढ़े ने अपनी आँखों को हाथों से ढाँप लिया है, फिर भी...

➤ **'पत्थर की बैंच' का कवि क्यों आशंकित हैं?**

*(**सहायक संकेत** -परिशिष्ट पृष्ठ संख्या 115, कवि की ई-मेल)*

➤ **देखें, अपने इलाके के मैदान में खड़े ये मित्रगण चिंतित हैं। इनसे हमदर्दी जताते हुए चित्र-वाचन करें।**

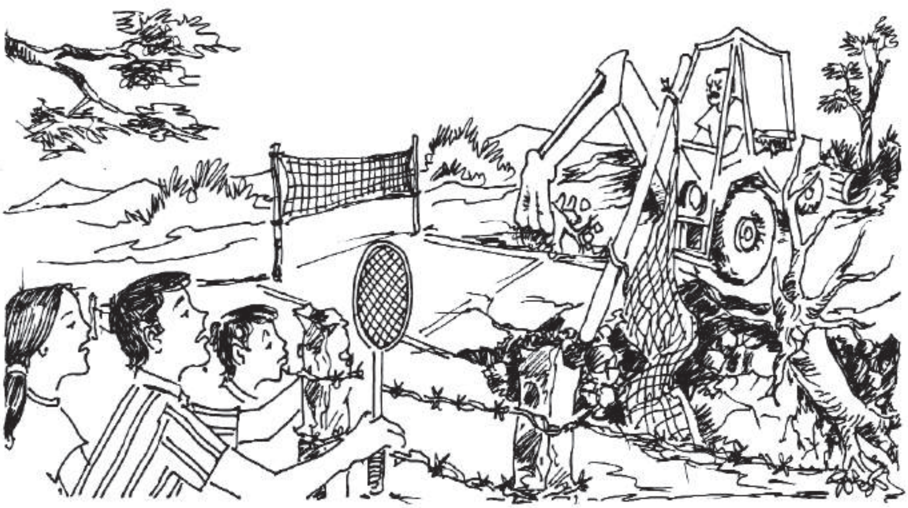

बताएँ-

- ये लड़के-लड़कियाँ क्यों चिंतित हैं?
- ये क्या सोच रहे होंगे?
- हमारे पास ऐसी जगहें कौन कौन-सी हैं?
- सार्वजनिक स्थानों के नष्ट हो जाने पर क्या नुकसान होता है?

➤ **संकेतों के आधार पर लेख लिखें।**

विषय : समाज-निर्माण में सार्वजनिक जगहों का योगदान

- सामाजिकता का संगम-स्थान
- दूसरों के सुख-दुख पर हमदर्दी
- घटती सार्वजनिक जगहें
- स्वार्थ की जीत
- प्रासंगिकता

लेख की परख, मेरी ओर से

- भूमिका है।
- सभी बिंदुओं को समेकित किया है।
- अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया है।
- दृष्टिकोण का समर्थन किया है।
- उपसंहार है।

➤ **कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।**

अनुवाद

We shall overcome, we shall overcome,
We shall overcome someday,
Deep in my heart, I do believe,
We shall overcome, someday

Charles A. Tindley

होंगे कामयाब, होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब एक दिन,
मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब, एक दिन।

गिरिजा कुमार माथुर

स्रोत भाषा की सामग्री को उसी अर्थ में लक्ष्य भाषा में अनूदित करना ही अनुवाद है। अनुवाद कला भी है और कौशल भी। यह अनुकरणात्मक ज़रूर है पर सर्जनात्मक भी है। अनुवादक को मूल कृति का अनुसरण करना चाहिए। अनुवाद पढ़ते समय ऐसा लगना चाहिए कि मूल कृति पढ़ रहा है। तभी अनुवाद सफल माना जाएगा।

अनुसृजन को आलोकित करनेवाली अनुवाद की दुनिया...

सृजन की ओर...

Letter to the Editor

In this fearful situation of increasing epidemics, an editorial like 'Badti Beem ariyam' of current relevance deserves special appreciation. The malody can be put to an end only of the government and public work single mindedly. Even in this age where we boast off great scientific and technological advancement, it is an utter disgrace that we cannot prevent such epidemics. Media has a great role in creating social awareness to prevent such epidemic.

Abhinav S
New Delhi

अनुवर्ती कार्य

- **पाठकनामा पढ़ें और लिखें-**
  - पाठक संपादक को बधाइयाँ दे रहा है, क्यों?
  - हमारा घमंड किसपर है?
  - हमारी कमी क्या है?
  - संचार-माध्यमों की कौन-सी भूमिका है?
- **निम्नलिखित प्रक्रियाओं से गुज़रते हुए पाठकनामा के अनुवाद का संशोधन करें।**
  - *वैयक्तिक संशोधन*
  - *ग्रूप में प्रस्तुति एवं चर्चा*
  - *ग्रूप में परिमार्जन*
  - *ग्रूपों की प्रस्तुति*
  - *अध्यापिका की ओर से तैयार की गई सामग्री की प्रस्तुति।*

इस भीषण परिस्थिति में, जहाँ संक्रामक बीमारियाँ तेज़ रफ़्तार से फैलते जा रहे हैं, बढ़ती बीमारियाँ संपादकीय विशेष प्रशंसनीय है। इस क़हर पर हम तभी लगाम डाल सकता है जबकि सरकार और जनता हमदिल से प्रयास करेंगे। खेद की बात है, एक ओर हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों पर घमंड करती जाती है दूसरी ओर ऐसी संक्रामक बीमारियों को रोकने में हम नाकामयाब रह रहा है। इसपर पैबंद डालने के लिए समाज को सतर्क करने में संचार माध्यम सराहनीय भूमिका निभा सकती हैं।

➤ संकेतों का अनुवाद हिंदी में करें ।

यशपाल

जन्म	:	3 दिसंबर 1903 फिरोज़पुर छावनी (पंजाब)		
मृत्यु	:	26 दिसंबर 1976		
प्रमुख रचनाएँ	:	उपन्यास	-	झूठा-सच, दिव्या, देशद्रोही, दादा कामरेड़, मनुष्य के रूप, मेरी तेरी उसकी बात, अमिता
		कहानी-संग्रह	-	पिंजरे की उड़ान, फूलों का कुर्ता, धर्मयुद्ध, सच बोलने की भूल
		संस्मरण	-	सेवाग्राम के दर्शन
		आत्मकथा	-	सिंहावलोकन
पुरस्कार	:	पद्मभूषण, साहित्य अकादमी पुरस्कार देव पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार		
विशेषताएँ	:	* हिंदी के शीर्षस्थ कहानीकारों में से एक। * क्रांतिकारी रचनाकार। * स्त्री-पुरुष संबंधों की उन्मुक्त चर्चा। * कहानियों का कलात्मक शिल्प।		
देन	:	सामाजिक कुरीतियाँ, शोषण और अंधविश्वास के खिलाफ़ समाज को सचेत करना।		

स्वतंत्रता संग्राम के सशक्त सेनानी यशपाल प्रगतिवादी साहित्यकार हैं। उनका साहित्य समाज के सर्वहारा वर्ग की शोषित ज़िंदगी का दस्तावेज़ है। एक गरीब परिवार के माध्यम से जनसाधारण के आर्थिक, सामाजिक और मानसिक द्वंद्व को उभारकर व्यंग्यपूर्ण ढंग से उसे सुलझाने की यशपाल की कला **दुख** कहानी में है।

निम्नवर्ग की दुख और निराशा भरी ज़िंदगी पर कहानीकार का हस्ताक्षर...

दुख

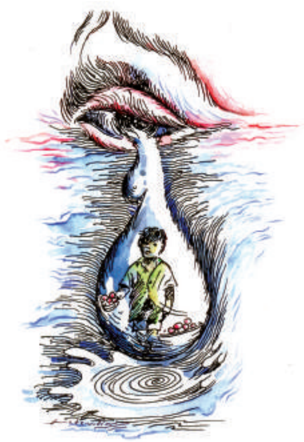

जिसे मनुष्य सर्वापेक्षा अपना समझ भरोसा रखता है, जब उसीसे अपमान और तिरस्कार प्राप्त हो तो मन वितृष्णा से भर जाता है, एकदम मर जाने की इच्छा होने लगती है। इसे शब्दों में बता सकना संभव नहीं।

दिलीप ने हेमा को पूर्ण स्वतंत्रता दी थी। वह उसका कितना आदर करता था; कितनी आंतरिकता से वह उसके प्रति अनुरक्त था। बहुत से लोग उसे 'अति' कहेंगे। इसपर भी जब वह हेमा को संतुष्ट न कर सका और हेमा केवल दिलीप के, उसकी सहेली के साथ सिनेमा देख आने के कारण, रात भर रूठी रह कर सुबह उठते ही माँ के घर चली गई, तब दिलीप के मन में क्षोभ का अंत न रहा।

सितंबर का अंतिम सप्ताह था। वर्षा की ऋतु बीत जाने पर भी दिन भर पानी बरसता रहा। दिलीप बैठक की खिड़की और दरवाज़ों पर पर्दे डाले बैठा था। वितृष्णा और ग्लानि में समय स्वयं यातना बन जाता है। एक-एक मिनिट गुज़रना मुश्किल हो जाता है। समय को बीतता न देख दिलीप खीझकर सो जाने का यत्न करने लगा। इसी समय जीने पर से छोटे भाई के धम-धम कर उतरते चले आने का शब्द सुनाई दिया। अलसाई हुई आँख को आधा खोल उसने दरवाज़े की ओर देखा।

छोटे भाई ने पर्दे को हटाकर पूछा–"भाई जी, आपको कहीं जाना न हो तो मैं मोटर-साइकिल ले जाऊँ?"

इस विघ्न से शीघ्र छुटकारा पाने के लिए दिलीप ने हाथ के इशारे से उसे इज़ाज़त दे, आँखें बंद कर लीं।

दीवार पर टंगे क्लॉक ने कमरे को गुँजाते हुए छः बज जाने की सूचना दी। दिलीप को अनुभव हुआ- क्या वह यों ही कैद में पड़ा रहेगा? उठकर खिड़की का पर्दा हटा कर देखा, बारिश थम गई थी। अब उसे दूसरा भय हुआ, कोई आ बैठेगा और अप्रिय चर्चा चला देगा।

वह उठा। भाई की साइकिल ले, गली के कीचड़ से बचता हुआ और उससे अधिक लोगों की निगाहों से छिपता हुआ वह मोरी दरवाज़े से बाहर निकला, शहर की पुरानी फसील के बाग से होता हुआ मिंटो पार्क जा पहुँचा। उस लंबे-चौड़े मैदान में पानी से भरी घास पर पछवा के तेज़ झोंकों में ठिठुरने के लिए उस समय कौन आता?

उस एकांत में एक बेंच के सहारे साइकिल खड़ा कर वह बैठ गया। सिर से टोपी उतार बेंच पर रख दी। सिर में ठंड लगने से मस्तिष्क की व्याकुलता कुछ कम हुई।

दिलीप क्यों व्याकुल था?

खयाल आया, यदि ठंड लग जाने से वह बीमार हो जाए, उसकी हालत खराब हो जाए तो वह चुपचाप शहीद की तरह अपने दुख को अकेला ही सहेगा। किसीको अपने दुख का भाग लेने के लिए न बुलाएगा। जो उसपर विश्वास नहीं कर सकता, उसे क्या अधिकार कि उसके दुख का भाग बँटाने आए। एक दिन मृत्यु दबे पाँव आएगी और उसके रोग के कारण, हृदय की व्यथा और रोग को ले, उसके सिर पर सांत्वना का हाथ धर उसे शांत कर चली जाएगी। उस दिन जो लोग रोने बैठेंगे, उनमें हेमा भी होगी। उस दिन उसे खोकर हेमा अपने नुकसान का अंदाज़ा कर अपने व्यवहार के लिए पछताएगी। यही बदला होगा दिलीप के चुपचाप सहते जाने का। निश्चय कर उसने संतोष का एक दीर्घ निश्वास लिया। वह करवट बदल ठंडी हवा खाने के लिए बैठ गया।

समीप तीन फर्लांग पर मुख्य रेलवे लाइन से कितनी ही गाड़ियाँ गुज़र चुकी थीं। उधर दिलीप का ध्यान न गया था। अब जब फ्रांटियर मेल तूफ़ान वेग से, तीव्र कोलाहल करती हुई गुज़री तो दिलीप ने उस ओर देखा। लगातार फर्स्ट और सेकेंड के डिब्बों से निकलनेवाले तीव्र प्रकाश से वह समझ गया–फ्रांटियर मेल जा रही है, साढ़े नौ बज गए।

स्वयं सह अन्याय के प्रतिकार की एक संभावना देख उसका मन कुछ हल्का हो गया था। वह लौटने के लिए उठा। शरीर में शैथिल्य की मात्रा बाकी रहने के कारण साइकिल पर न चढ़ वह पैदल-पैदल बागोबाग, बादशाही मसजिद से टकसाली दरवाज़े और टकसाली से भाटी दरवाज़े पहुँचा। मार्ग में शायद ही कोई व्यक्ति दिखाई दिया हो। सड़क किनारे स्तब्ध खड़े बिजली के लैंप निष्काम और निर्विकार भाव से अपना प्रकाश सड़क पर डाल रहे थे। मनुष्यों के अभाव की कुछ भी परवाह न कर, लाखों पतंगे गोले बाँध-बाँध कर, इन लैंपों के चारों ओर नृत्य कर रहे थे। सौर जगत् के यह अद्भुत नमूने थे। प्रत्येक पतंगा एक नक्षत्र की भाँति अपने मार्ग पर चक्कर काट रहा था। कोई छोटा, कोई बड़ा दायरा बना रहा था। कोई दायें को, कोई बायें को, कोई विपरीत गति में निरंतर चक्कर काटते चले जा रहे थे। कोई किसीसे टकराता नहीं। वृक्षों के भीगे पत्ते बिजली के प्रकाश में चमचमा रहे थे।

स्वयं सह अन्याय के प्रतिकार की एक संभावना देख उसका मन कुछ हल्का हो गया था। यहाँ प्रतिकार संभावना क्या थी?

एक लैंप के नीचे से आगे बढ़ने पर उसकी छोटी परछाई उसके आगे फैलती चलती। ज्यों-ज्यों वह लैंप से आगे बढ़ता, परछाई पलटकर पीछे हो जाती। बीच-बीच में वृक्षों की टहनियों की परछाई उसके ऊपर से होकर निकल जाती। सड़क पर पड़ा प्रत्येक भीगा पत्ता लैंपों की किरणों का उत्तर दे रहा था। दिलीप

सोच रहा था—मनुष्य के बिना भी संसार कितना व्यस्त और रोचक है!

कुछ कदम आगे बढ़ने पर सड़क किनारे नींबू के वृक्षों की छाया में कोई श्वेत-सी चीज़ दिखाई दी। कुछ और बढ़ने पर मालूम हुआ, कोई छोटा-सा लड़का सफ़ेद कुर्ता-पायजामा पहने, एक थाली सामने रखे कुछ बेच रहा है।

'मनुष्य के बिना भी संसार कितना व्यस्त और रोचक है!' -क्यों?

बचपन में गली-मुहल्ले के लड़कों के साथ उसने अक्सर खोमचेवाले से सौदा खरीद कर खाया था। अब वह इन बातों को भूल चुका था, परंतु इस सर्दी में सुनसान सड़क पर, जहाँ कोई आने-जानेवाला नहीं, यह खोमचा बेचनेवाला कैसे बैठा है?

खोमचेवाले के क्षुद्र शरीर और आयु ने भी उसका ध्यान आकर्षित किया। उसने देखा, रात में सौदा बेचने निकलनेवाले इस सौदागर के पास मिट्टी के तेल की ढिबरी तक नहीं। समीप आकर उसने देखा, वह लड़का सर्द हवा में सिकुड़ कर बैठा था। दिलीप के समीप आने पर उसने आशा की एक निगाह उसकी ओर डाली और फिर आँखें झुका लीं।

दिलीप ने और ध्यान से देखा, लड़के के मुख पर खोमचा बेचनेवालों की-सी चतुरता न थी, बल्कि उसकी जगह थी एक कातरता। उसकी थाली भी खोमचे का थाल न होकर घरेलू व्यवहार की एक मामूली हल्की मुरादाबादी थाली थी। तराज़ू भी न था। थाली में कागज़ के आठ टुकड़ों पर पकौड़ों को बराबर-बराबर ढेरियाँ लगाकर रख दी गई थीं।

खोमचे बेचनेवाले छोटे लड़के की हालत का वर्णन कैसे किया गया है?

दिलीप ने सोचा, इस ठंडी रात में हमीं दो व्यक्ति बाहर हैं। वह उसके पास जाकर ठिठक गया। मनुष्य-मनुष्य में कितना भेद होता है परंतु मनुष्यत्व एक चीज़ है जो कभी-कभी भेद की सब दीवारों को लाँघ जाता है

दिलीप को समीप खड़े होते देख लड़के ने कहा– "एक-एक पैसे में एक-एक ढेरी।"

एक क्षण चुप रह दिलीप ने पूछा– "सबके कितने पैसे?"

बच्चे ने उँगली से ढेरियों को गिनकर जवाब दिया– "आठ पैसे।"

दिलीप ने केवल बात बढ़ाने के लिए पूछा– "कुछ कम नहीं लेगा?"

सौदा बिक जाने की आशा से जो प्रफुल्लता बालक के चेहरे पर आ गई थी, वह दिलीप के इस प्रश्न से उड़ गई। उसने उत्तर दिया– "माँ बिगड़ेगी।"

इस उत्तर से दिलीप द्रवित हो गया और बोला – "क्या पैसे माँ को देगा?"

बच्चे ने हामी भरी।

दिलीप ने कहा– "अच्छा सब दे दो।"

लड़के की व्यस्तता देख दिलीप ने अपना रूमाल निकाल कर दे दिया और पकौड़े उसमें बँधवा लिए।

आठ पैसे का खोमचा बेचने जो इस सर्दी में निकला है उसके घर की क्या अवस्था होगी, यह सोचकर दिलीप सिहर उठा। उसने जेब से एक रुपया निकाल लड़के की थाली में डाल दिया। रुपए की खनखनाहट से वह सुनसान रात गूँज उठी। रुपए को देख लड़के ने कहा – "मेरे पास तो पैसे नहीं है।"

दिलीप ने पूछा– "तेरा घर कहाँ है?"

"पास ही गली में है।" लड़के ने जवाब दिया।

दिलीप के मन में उसका घर देखने का कौतूहल जाग उठा। बोला– "चलो, मुझे भी उधर से ही जाना है। रास्ते में तुम्हारे घर से पैसे ले लूँगा।"

बच्चे ने घबराकर कहा– "पैसे तो घर पर भी न होंगे।"

दिलीप सुनकर सिहर उठा, परंतु उत्तर दिया–“होंगे, तुम चलो।”

लड़का खाली थाली को छाती से चिपटा आगे-आगे चला और उसके पीछे बाई साइकिल को थामे दिलीप।

दिलीप ने पूछा–“तेरा बाप क्या करता है?”

लड़के ने उत्तर दिया–“बाप मर गया है।”

दिलीप चुप हो गया। कुछ और दूर जा उसने पूछा–“तुम्हारी माँ क्या करती है?”

लड़के ने उत्तर दिया–“माँ एक बाबू के यहाँ चौका-बर्तन करती थी, अब बाबू ने हटा दिया है।”

दिलीप ने पूछा–“क्यों हटा दिया बाबू ने?”

लड़के ने जवाब दिया–“माँ अढ़ाई रुपया महीना लेती थी, जगतू की माँ ने बाबू से कहा कि वह दो रुपए से सब काम कर देगी, इसलिए बाबू की घरवाली ने माँ को हटाकर जगतू की माँ को रख लिया है।”

दिलीप फिर चुप हो गया। लड़का नंगे पैर गली के कीचड़ में छप-छप करता चला जा रहा था। दिलीप को कीचड़ से बचकर चलने में असुविधा हो रही थी। लड़के की चाल की गति को कम करने के लिए दिलीप ने फिर प्रश्न किया–“तुम्हें जाड़ा नहीं मालूम होता?”

लड़के ने शरीर को गरम करने के लिए चाल को और तेज़ करते हुए उत्तर दिया–“नहीं।”

दिलीप ने फिर प्रश्न किया–“जगतू की माँ क्या करती थी?”

लड़के ने कहा–“जगतू की माँ स्कूल में लड़कियों को घर से बुला लाती थी। स्कूलवालों ने लड़कियों को घर से लाने के लिए मोटर रख ली है और उसे निकाल दिया है।”

बाबू की घरवाली ने माँ को हटाकर जगतू की माँ को रख लिया है। यहाँ समाज की कौन-सी मनोवृत्ति प्रकट है ?

गली के मुहाने पर कमेटी का बिजली का लैंप जल रहा था। ऊपर की मंज़िल की खिड़कियों से भी गली में कुछ प्रकाश पड़ रहा था। उससे गली का कीचड़ चमककर किसी कदर मार्ग दिखाई दे रहा था।

सँकरी गली में एक बड़ी खिड़की के आकार का दरवाज़ा खुला था। उसका धुँधला लाल-सा प्रकाश सामने पुरानी ईंटों की दीवार पर पड़ रहा था। इसी दरवाज़े में लड़का चला गया।

एक बड़ी खिड़की के आकार का दरवाज़ा–के प्रयोग से कहानीकार क्या बताना चाहते हैं?

दिलीप ने झाँककर देखा। मुश्किल से आदमी के कद की ऊँचाई की कोठरी में–जैसी प्रायः शहरों में ईंधन रखने के लिए बनी रहती है–धुआँ उगलती मिट्टी के तेल की एक ढिबरी अपना धुँधला लाल प्रकाश फैला रही थी। एक छोटी चारपाई, जैसी कि श्राद्ध में महाब्राह्मणों को दान दी जाती है, काली दीवार के सहारे खड़ी थी। उसके पाये से दो-एक मैले कपड़े लटक रहे थे। एक क्षीणकाय, आधी उमर की स्त्री मैली-सी धोती में शरीर लपेटे बैठी थी।

बेटे को देखा स्त्री ने पूछा–"सौदा बिक गया बेटा?"

लड़के ने उत्तर दिया–"हाँ माँ," और रुपया माँ के हाथ में देकर कहा, "बाकी पैसे बाबू को देने हैं।"

रुपया हाथ में ले माँ ने विस्मय से पूछा–"कौन बाबू बेटा?"

बच्चे ने उत्साह से कहा–" साइकिल वाले बाबू ने सब सौदा लिया है। उसके पास छुट्टे पैसे नहीं थे। बाबू गली में खड़ा है।"

घबराकर माँ बोली–"रुपए के पैसे कहाँ मिलेंगे बच्चा?" सिर के कपड़े को संभाल दिलीप को सुनाने के अभिप्राय से माँ ने कहा–"बेटा, रुपया बाबू जी को लौटाकर घर का पता पूछ ले, पैसे कल ले आना।"

लड़का रुपया ले दिलीप को लौटाने आया। दिलीप ने ऊँचे स्वर से ताकि माँ सुन ले, कहा–"रहने दो रुपया, कोई परवाह नहीं, फिर आ जाएगा।"

सिर के कपड़े को आगे खींच स्त्री ने कहा– "नहीं जी, आप रुपया लेते जाइए, बच्चा पैसे कल ले आएगा।"

दिलीप ने शरमाते हुए कहा–"रहने दीजिए, यह पैसे मेरी तरफ से बच्चे को मिठाई खाने के लिए रहने दीजिए।"

स्त्री नहीं-नहीं करती रह गई। दिलीप अँधेरे में पीछे हट गया।

स्त्री के मुर्झाए, कुंहलाए पीले चेहरे पर कृतज्ञता और प्रसन्नता की झलक छा गई। रुपया अपनी चादर की खूँट में बाँध, एक ईंट पर रखे पीतल के लोटे के बाँह के इशारे से पानी ले उसने हाथ धो लिया और पीतल के एक बर्तन के नीचे से मैले अँगोछे में लिपटी दो रोटियाँ निकाल, बेटे का हाथ धुला उसे खाने को दे दीं ।

बेटा तुरंत की कमाई से पुलकित हो रहा था। मुँह बना कहा–"ऊँ-ऊँ रूखी रोटी!"

माँ ने पुचकारकर कहा–"नमक डाला हुआ है बेटा।"

बच्चे ने रोटी ज़मीन पर डाल दी और ऐंठ गया–"सुबह भी रूखी रोटी"..."हाँ रोज़-रोज़ रूखी!"

हाथ आँखों पर रख बच्चा मुँह फैलाकर रोना ही चाहता था, माँ ने उसे गोद में खींच लिया और कहा– "मेरा राजा बेटा, सुबह ज़रूर दाल खिलाऊँगी। देख, बाबू तेरे लिए रुपया दे गए हैं। शाबाश।"

"सुबह मैं तुझे खूब सौदा बना दूँगी, फिर तू रोज़ दाल खाना।"

बेटा रीझ गया। उसने पूछा–"माँ तूने रोटी खा ली?"

स्त्री नहीं-नहीं करती रह गई, क्यों?

खाली अँगोछे को तहाते हुए माँ ने उत्तर दिया–"हाँ, बेटा! अब मुझे भूख नहीं है, तू खा ले।"

भूखी माँ का बेटा बचपन के कारण रूठा था, परंतु माँ की बात के बावजूद घर की हालत से परिचित था। उसने अनिच्छा से एक रोटी माँ की ओर बढ़ा कर कहा–"एक रोटी तू खा ले।"

'मुझे अभी भूख नहीं, तू खा'-माँ ऐसा क्यों कह रही है?

माँ ने स्नेह से पुचकारकर कहा–"ना बेटा, मैंने सुबह देर से खाई थी, मुझे अभी भूख नहीं, तू खा।"

दिलीप के लिए और देख सकना संभव न था। दाँतों से होंठ दबा वह पीछे हट गया।

मकान पर आकर वह बैठा ही था कि नौकर ने आ दो भद्रपुरुषों के नाम बता कर कहा, आए थे बैठ कर चले गए। खाना तैयार होने की सूचना दी। दिलीप ने उसकी ओर बिना देखे ही कहा–"भूख नहीं है।" उसी समय उसे लड़के की माँ का भूख नहीं कहना याद आ गया।

नौकर कुछ न समझ विस्मित खड़ा रहा।

दिलीप ने खीझ कर कहा–"जाओ जी।"

मिट्टी की तेल की ढिबरी के प्रकाश में देखा वह दृश्य उसकी आँखों के सामने से हटना न चाहता था।

छोटे भाई ने आकर कहा–"भाभी ने यह पत्र भेजा है।" और लिफ़ाफ़ा दिलीप की ओर बढ़ा दिया।

दिलीप ने पत्र खोला। पत्र की पहली लाइन में लिखा था–"मैं इस जीवन में दुख ही देखने को पैदा हुई हूँ..."

दिलीप ने आगे न पढ़, पत्र फाड़कर फेंक दिया। उसके माथे पर बल पड़ गए उसके मुँह से निकला–

"काश तुम जानती दुख किसे कहते हैं! तुम्हारा यह रसीला दुख तुम्हें न मिले तो ज़िंदगी दूभर हो जाए।"

'रसीला दुख' से क्या तात्पर्य है ?

अनुवर्ती कार्य

- *‘इस ठंडी रात में भी हमीं दो व्यक्ति बाहर हैं।’* **दोनों के बाहर रहने का विशेष कारण अपने शब्दों में लिखें।**
- *‘मैं इस जीवन में दुख ही देखने को पैदा हुई हूँ... दिलीप ने आगे न पढ़ा, पत्र फाड़कर फेंक दिया’।* **हेमा का दिलीप के नाम का वह पत्र कल्पना करके लिखें।**
- *‘मिट्टी के तेल की ढिबरी के प्रकाश में देखा वह दृश्य उनकी आँखों के सामने से न हटता था।’* **उस दिन की दिलीप की डायरी लिखें।**
  - बच्चे से भेंट
  - माँ की परेशानी
  - माँ-बेटे का प्यार
  - असली दुख की पहचान और तुलना

डायरी की परख, मेरी ओर से

- *दोनों घटनाओं का ज़िक्र है।*
- *माँ-बेटे के प्रति सहानुभूति है।*
- *असली दुख और नकली दुख की पहचान है।*
- *आत्मपरक शैली है।*

- *बच्चे की माँ और दिलीप, दोनों के मुँह से निकलते हैं-‘भूख नहीं है।’* **दोनों के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में इस कथन की विवेचना करके टिप्पणी लिखें।**

वाद-विवाद चलाएँ।

'स्कूलवालों ने लड़कियों को घर से लाने के लिए मोटर रख ली है और उसे निकाल दिया है।'

मशीनीकरण ने एक ओर सुविधाएँ पैदा की हैं तो दूसरी ओर उसने बेरोज़गारी को बढ़ावा दिया है। इस विषय पर वाद-विवाद चलाएँ— *मशीनीकरण: सकारात्मक बनाम नकारात्मक*

ये गतिविधियाँ अपनाएँ

- *एक छात्र संचालक बने।*
- *फिर कक्षा के छात्र दो दलों में बँटें।*
- *वे दलों में चर्चा करें।*
- *पहला दल मशीनीकरण के अनुकूल चर्चा-बिंदु तैयार करे।*
- *दूसरा दल मशीनीकरण के प्रतिकूल चर्चा-बिंदु तैयार करे।*
- *दोनों दल आमने-सामने बैठें।*
- *संचालक विषय प्रस्तुत करे।*
- *पहला दल अपना वाद प्रस्तुत करे और अपने मत का समर्थन करे।*
- *दूसरा दल उसका प्रतिवाद प्रस्तुत करे और अपने मत का समर्थन करे।*
- *वाद-प्रतिवाद ज़ारी रखे।*
- *संचालक ज़रूरत पड़ने पर हस्तक्षेप करे।*
- *अंत में संचालक द्‌वारा संक्षिप्तीकरण।*

➤ **वाद-विवाद के आधार पर 'मशीनीकरण के गुण-दोष'- पर एक आलेख तैयार करें।**

आलेख की परख, मेरी ओर से

- *ग्रूपों द्‌वारा प्रस्तुत सामग्रियों का आशय लिखा है।*
- *वादों और प्रतिवादों को सूचित किया है।*
- *अपना मत प्रकट किया है।*
- *अपने मत का समर्थन किया है।*
- *भूमिका और उपसंहार है।*

शब्दार्थ

आनंद की फुलझड़ियाँ

अमराई - आम का बाग
फुलझड़ियाँ - आतिशबाजी
आम की गुठलियाँ - आम के बीज
संभ्रांत - अभिजात
तहजीब - शिष्टता
बशर्ते - यदि
बाकायदा - नियम के अनुरूप
छीना-झपटी - लूटपाट
महकमा - विभाग
तानेकशी - उपहास
दरख्वास्त - निवेदन
हो-हल्ला - कोलाहल
खटाखट - तुरंत
महज - केवल
रूखा - उबाऊ
आँकड़ा - अंक
माथापच्ची करना - बहुत सोचना
कद्र - आदर
किंचितमात्र - थोड़ा-सा

पत्थर की बेंच

कुतरना - दाँत से काटना
कुचला हुआ - पैरों से दबा हुआ
सहलाना - धीरे-धीरे हाथ फेरना
ढाँपना - ढकना
सिलसिला - परंपरा
उखाड़ना - जड़ से निकालना

सृजन की ओर...

basic - बुनियादी
breeding - प्रजनन
co-operation - सहयोग
improve - सुधारना
removal - हटाना
sanitation - सफाई
surroundings - परिवेश

दुख

वितृष्णा - उदासीन
खीझ - नाराज़
कीचड़ - पानी मिली मिट्‌टी
पछवा - पश्चिम पवन
ठिठुरना - काँपना
शहीद - a martyr
नुकसान - हानि
अंदाज़ा - अनुमान
शैथिल्य - थकान
दायरा - कार्यक्षेत्र
परछाई - साया
टहनी - शाखा
खोमचेवाला - घूमकर फेरी करनेवाला
सुनसान - निर्जन
सौदागर - व्यापारी
ढिबरी - मिट्‌टी के तेल का छोटा-सा दीप
सिकुड़ना - सिमटना
निगाह - दृष्टि
तराज़ू - तुलायंत्र
ठिठक - संकोच
लाँघना - छलाँग लगाकर पार करना
हामी - स्वीकृति
सिहरना - ठिठुरना
खनखनाहट - झंकार
मुहाने - नुक्कड़
सँकरी - पतली
कुँहलाना - मुरझाना
ऐंठ - हठ
तहाना - to fold
बनाम - versus (v/s)

इकाई चार

दर-किनार

अपराध

समय के साथ हम भी...

कहना नहीं आता

अधिगम उपलब्धियाँ

- समकालीन कहानी की अवधारणा पाकर कहानी के पात्रों के चरित्र पर टिप्पणी लिखता है।
- कहानी का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- अपनी गलतियों पर पश्चाताप करता है।
- सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रयुक्त शब्दों का प्रयोग करता है।
- कवि के विचारों का विश्लेषण करके कविता पर चर्चा करता है।
- इक्कीसवीं सदी की कविताओं की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन टिप्पणी लिखता है।
- संगोष्ठी में अपना मत प्रकट करता है और आलेख तैयार करता है।
- हाशिए पर रह गई जनता की आवाज़ सुनता है।

उदय प्रकाश

जन्म	:	1 जनवरी 1952, शहड़ोल जिला, मध्यप्रदेश
प्रमुख रचनाएँ	:	कविता-संग्रह : सुनो कारीगर, अबूतर-कबूतर, रात में हारमोनियम, एक भाषा हुआ करती है, कवि ने कहा कहानी-संग्रह : दरियाई घोड़ा, तिरिछ, और अंत में प्रार्थना, पोल गोमरा का स्कूटर, पीली छतरीवाली लड़की, मोहनदास, मैंगोसिल
पुरस्कार	:	केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, मुक्तिबोध सम्मान
विशेषताएँ	:	* उत्तराधुनिक समय को संप्रेषित करने की क्षमता। * कविताओं और कहानियों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहचान।
देन	:	मनुष्य की कोमल संवेदनशीलता को बचाए रखने का आह्‍वान
संप्रति	:	जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्‍यालय में अध्यापक
ई-मेल	:	udayprakash7@hotmail.com

समकालीन कहानी होने का सबसे बड़ा प्रमाण है उसकी अकृत्रिमता। समकालीन कथाकार घटना को सीधे प्रस्तुत करते हैं। घटना से उत्पन्न समस्या के समाधान पर वे चिंतित नहीं है। जीवन में घटित होनेवाली साधारण घटना भी उनके लिए कहानी है, क्योंकि कहानी जीवन से जुड़ी है। **अपराध** घटित घटना से उत्पन्न पश्चाताप का लेखा-जोखा है।

समकालीन जीवन में अंतद्‌र्वंद्‌व से जूझनेवाले व्यक्ति का आत्मसंघर्ष चित्रित करनेवाली कहानी....

अपराध

मेरे भाई मुझसे छह साल बड़े थे। आश्चर्य था कि पूरे गाँव में सभी लड़के मुझसे छह वर्ष बड़े थे। मैं इसीलिए सबसे छोटा था और अकेला था। सब खेलते तो उनके पीछे मैं लग जाता।

मेरे भाई बचपन से अपाहिज थे। उनके एक पैर को पोलियो हो गया था। लेकिन वे बहुत सुंदर थे, देवताओं की तरह। वे आसपास के कई गाँवों में सबसे अच्छे तैराक थे और उनको हाथ के पंजों की लड़ाई में कोई नहीं हरा सकता था। घूँसे से नारियल और ईंटें तोड़ देते थे, जबकि मैं दुबला-पतला था, कमज़ोर और चिड़चिड़ा। मुझे अपने भाई से ईर्ष्या होती थी क्योंकि उनके बहुत सारे दोस्त थे।

मैं सबसे छोटा था इसलिए मैं भाई के लिए एक उत्तरदायित्व की तरह था। वे मुझसे प्यार करते थे और मेरे प्रति उनका रुख़ एक संरक्षक की ज़िम्मेदारी जैसा था।

सब खेलते और मैं छोटा होने के कारण अकेला पड़ जाता तो भाई आकर मेरी मदद करते। जोड़ी और पालीवाले कई खेलों में वे मुझे अपनी पाली में शामिल कर लेते थे। कोई दूसरा लड़का अपनी पाली में मुझे शामिल करके हार का खतरा नहीं उठाना चाहता था। अकसर भाई मेरी वजह से ही हारते। फिर भी वे मुझसे कभी कुछ नहीं कहते थे। मैं उनकी ज़िम्मेदारी था और वह उसे निभाना चाहते थे। जहाँ तक मुझे याद है, उन्होंने कभी मुझे नहीं मारा।

"अकसर भाई मेरी वजह से ही हारते। फिर भी वे मुझसे कभी कुछ नहीं कहते थे।" क्यों?

जो कुछ मैं बताने जा रहा हूँ, उसका संबंध भाई और मुझसे ही है। यह बहुत महत्वपूर्ण घटना है। ऐसी घटना जो जीवन भर आपका साथ नहीं छोड़ती और अक्सर स्मृति में, बीच-बीच में, कहीं अचानक सुलगने

लगती है। किसी अंगारे की तरह।

हुआ उस दिन यह कि मैं भाई के साथ खेलने गया। उस दिन बारिश हो चुकी थी और शाम की ऐसी धूप फैली हुई थी जो शरीर में उल्लास भरा करती है। ऐसे में कोई भी खेल बहुत तेज़, गतिमय और सम्मोहक हो जाता है।

सभी लड़के खड़ब्बल खेल रहे थे। लकड़ी की छोटी-छोटी डंडियाँ हर लड़के के पास थीं। पूरी ताकत से खड़ब्बल को जमीन पर, आगे की ओर गति देते हुए, सीधे मारा जा रहा था। ताकत और संवेग से नम धरती पर गिरा हुआ खड़ब्बल गुलाटियाँ खाते हुए बहुत दूर तक जाता था।

मुझमें न इतनी ताकत थी, न मैं इतना बड़ा था कि खड़ब्बल उतनी दूर तक पहुँचाता, जबकि वहाँ एक होड़, एक प्रतिद्वंद्विता शुरू हो चुकी थी। कोई भी हारना नहीं चाहता था। यह एक ऐसा खेल था, जिसमें कोई पाली नहीं होती, कोई किसीका जोड़ीदार नहीं होता। हर कोई अपनी अकेली क्षमता से लड़ता है।

भाई भी उस खेल में डूब गए थे। वे कई बार पिछड़ रहे थे, इसलिए गुस्से और तनाव में और ज़्यादा ताकत से खड़ब्बल फेंक रहे थे।

वे मुझे भुला चुके थे। और मैं अकेला छूट गया था। छह वर्ष पीछे। कमज़ोर। उस दिन, उस खेल में शामिल होने के लिए मुझे छह वर्षों की दूरी पार करनी पड़ती, जो मैं नहीं कर सकता था।

भाई जीतने लगे थे। उनका चेहरा खुशी और उत्तेजना में दहक रहा था। उन्होंने एक बार भी मेरी ओर नहीं देखा। वे मुझे पूरी तरह भूल चुके थे।

मुझे पहली बार यह लगा कि मैं वहाँ कहीं नहीं हूँ।

मुझे रोना आ रहा था और भाई के प्रति मेरे भीतर एक बहुत ज़बरदस्त प्रतिकार पैदा हो रहा था। मैं अपने खड़ब्बल को, अकेला अलग खड़ा हुआ एक पत्थर पर पटक रहा था। मैं ईर्ष्या, आत्महीनता, उपेक्षा और नगण्यता की आँच में झुलस रहा था।

तभी अचानक मेरा खड़ब्बल चट्टान से टकराकर उछला और सीधे मेरे माथे पर आकर लगा। माथा फूट गया और खून बहने लगा। मैं चीखा तो भाई मेरी ओर दौड़े। खेल बीच में ही रुक गया था।

"क्या हुआ? क्या हुआ?" भाई घबरा गए थे और मेरे माथे को अपनी हथेली से दबा रहे थे। मेरा गुस्सा मिटा नहीं था। मैं भाई को अपनी उपेक्षा का दंड देना चाहता था।

मैंने भाई को झटक दिया और खुद को छुड़ाकर घर की ओर भागा। भाई डर गए थे और दौड़कर मुझे मनाना चाहते थे। लेकिन उनका दायाँ पैर पोलियो का शिकार था इसलिए वे मेरे साथ दौड़ नहीं सकते थे। उन्होंने लँगड़ाकर दौड़ने की कोशिश भी की, लेकिन वे गिर गए।

मेरी कमीज़ खून से भीग गई थी। सिर के बाल खून से लिथड़ गए थे। माँ मुझे देखकर डर गई और रोने लगी। पिताजी घबराए हुए घाव पर पाउडर डालने लगे।

मैंने रोते हुए माँ को बताया कि मुझे भाई ने खड़ब्बल से मारा है।

तभी मैंने देखा कि भाई लँगड़ाते हुए चले आ रहे थे,अकेले। उनको आशंका हो गई होगी। वे डरे हुए रहे होंगे।

भाई बार-बार कहते रहे कि मैंने इसे नहीं मारा, लेकिन पिताजी उन्हें पीटे जा रहे थे। भाई रो रहे थे। वे सच बोल रहे थे, लेकिन उन्हें सज़ा मिल रही थी।

बड़े भाई के प्रति छोटे के मन में प्रतिकार की भावना क्यों उत्पन्न हुई?

मैंने भाई का चेहरा देखा। वे मेरी ओर देख रहे थे। उनकी आँखें लाल थीं और उनमें करुणा और कातरता थी, जैसे वे मुझसे याचना कर रहे हों कि मैं सच बोल दूँ। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। उन्हें सज़ा मिल चुकी थी। फिर इतनी जल्द बात को बिलकुल बदलना मुझे संभव भी नहीं लग रहा था। क्या पता, पिताजी फिर मुझे ही मारने लगते! मैं डर रहा था।

यह घटना वर्षों पुरानी है। लेकिन भाई की वे कातर आँखें अब भी मुझे कभी-कभी घूरने लगती हैं। याचना करती हुई, सच बोलने की भीख माँगती हुई। मेरी स्मृति में जब भी वे आँखें जाग उठती हैं, मेरी पूरी चेतना ग्लानि, बेचैनी और अपराध-बोध से भर उठती है।

मैं अपने इस अपराध के लिए क्षमा माँगना चाहता हूँ। इस अपराध की सज़ा पाना चाहता हूँ। लेकिन अब तो माँ और पिताजी भी नहीं हैं, जिनसे मैं यह बताऊँ कि उस दिन ठीक-ठीक क्या हुआ था।

भाई ही मुझे क्षमा कर सकते हैं, जिन्हें मेरे झूठ का दंड भोगना पड़ा। उनसे मैंने इस घटना का ज़िक्र भी करना चाहा, लेकिन उन्हें वह घटना याद ही नहीं। वे इसे बिलकुल, पूरी तरह भूल चुके हैं।

छोटे भाई ने अपने अपराध के लिए क्षमा माँगनी चाही। लेकिन असफल रहा–क्यों?

तो इस अपराध के लिए मुझे क्षमा कौन कर सकता है? क्या यह ऐसा अपराध नहीं है जिसके बारे में लिया गया जो निर्णय था, वह गलत और अन्यायपूर्ण था, लेकिन जिसे अब बदला नहीं जा सकता?

और क्या यह ऐसा अपराध नहीं है, जिसे कभी भी क्षमा नहीं किया जा सकता? क्योंकि इससे मुक्ति अब असंभव हो चुकी है।

अनुवर्ती कार्य

- **छोटे भाई के प्रति बड़े भाई का लगाव सूचित करनेवाले वाक्य चुनें।**
  जैसे : खेल में अकेला होने पर भाई आकर मेरी मदद करता है।

- **निम्नलिखित चरित्रगत विशेषताओं के आधार पर तालिका भरें।**
  - पश्चातापग्रस्त
  - दोस्ताना
  - ईर्ष्यालु
  - झूठा
  - सहानुभूतिवाला

बड़ा भाई	छोटा भाई

- *'वे मुझसे प्यार करते थे और मेरे प्रति उनका रुख एक संरक्षक की ज़िम्मेदारी जैसा था'* - **'अपराध' कहानी के आधार पर बड़े भाई की चरित्रगत विशेषताओं को विस्तार दें।**

- *'तो इस अपराध के लिए मुझे क्षमा कौन कर सकता है'* - **पश्चाताप से विवश छोटा भाई सालों बाद क्षमा माँगते हुए अपने बड़े भाई को पत्र लिखता है। वह पत्र लिखें।**

पत्र की परख, मेरी ओर से

- *स्वाभाविक शुरुआत है (बड़े भाई की वर्तमान स्थिति की तलाश / परिवारवालों की तलाश/...)*
- *पुरानी घटना की याद दिलाई है।*
- *अपने अपराध पर पश्चाताप प्रकट किया है।*
- *बड़े भाई के जवाबी पत्र की माँग की है।*
- *पत्र की रूपरेखा है। (संबोधन/स्वनिर्देश/तारीख/स्थान/...)*

- *'मेरी स्मृति में जब भी वे आँखें जाग उठती हैं, मेरी पूरी चेतना, ग्लानि, बेचैनी और अपराध-बोध से भर उठती है।'*
  यह छोटे भाई की प्रायश्चित भरी वाणी है। अवश्य ही आपको या आपके परिचित को ऐसा कोई अनुभव हुआ होगा। उस अनुभव का वर्णन करें।

पारिभाषिक शब्दावली

पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो रसायन, भौतिकी, दर्शन, राजनीति, सूचना-प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त हैं। पारिभाषिक शब्द अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ में सुनिश्चित रूप से परिभाषित होते हैं। अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निश्चित रूप से परिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक कहे जाते हैं। कंप्यूटर एक वरदान है। क्षण भर में यह दुनिया को निकट लाता है और चुटकी में जटिल से जटिल समस्याओं का हल करता है। इंटरनेट एक प्रकार का कंप्यूटर नेटवर्क ही है। इसकी सहायता से हर क्षेत्र की जानकारी प्राप्त होती है। शिक्षा के क्षेत्र में इससे सबसे बड़ी मदद मिलती है। इंटरनेट द्वारा संचालित एक वैभवशाली माध्यम है ई-मेल अथवा इलक्ट्रोनिक मेल। किसी भी संदेश को विद्युत्गति से दुनिया के किसी भी कोने में ई-मेल पहुँचाता है। इंटरनेट का प्रसार हिंदी की दुनिया में तेज़ रफ़्तार से हो रहा है।

सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रतिष्ठित हो रही पारिभाषिक शब्दावली - एक तलाश...

समय के साथ हम भी...

अंतर्जाल (इंटरनेट) में ई-मेल पृष्ठ को अंग्रेज़ी से हिंदी में बदलने का तरीका।

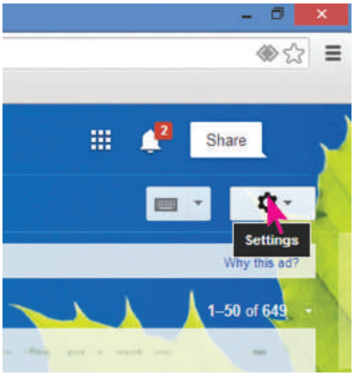

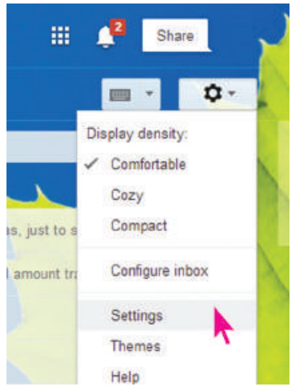

1 ई-मेल पन्ने में ✿ पर क्लिक करें।

2 अब settings पर क्लिक करें।

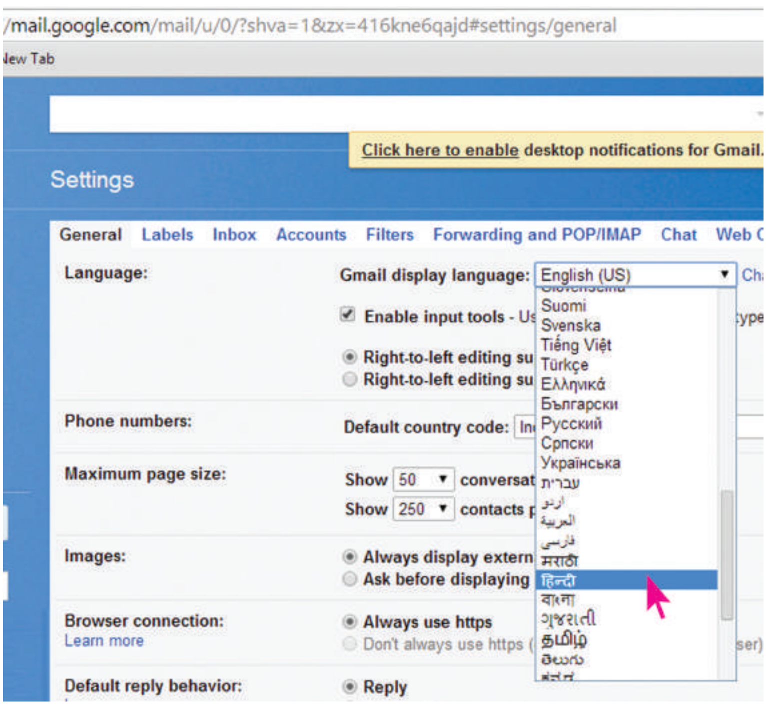

3 क्लिक करने से भाषा का विकल्प आएगा।
उसमें हिंदी चुनें, क्लिक करें।

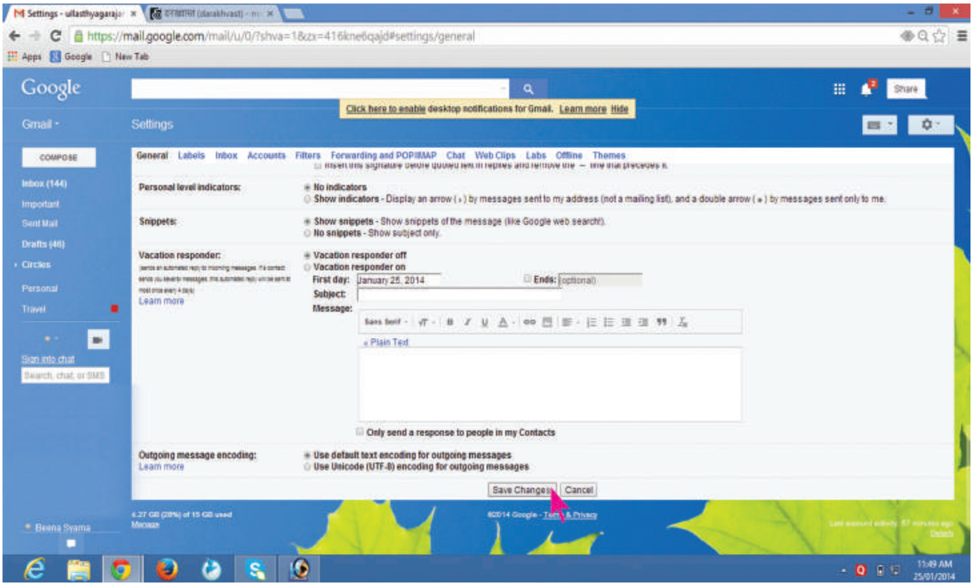

4 अब जो पृष्ठ आएगा उसमें save changes में क्लिक करें। आपके सामने ई-मेल हिंदी में तैयार है।

अनुवर्ती कार्य

➤ मिलान करके लिखें।

पवन करण

जन्म	:	18 जून 1964, ग्वालियर, मध्यप्रदेश
प्रमुख रचनाएँ	:	कविता संग्रह - इस तरह मैं स्त्री मेरे भीतर अस्पताल के बाहर टेलीफोन कहना नहीं आता
पुरस्कार	:	रामविलास शर्मा पुरस्कार, वागीश्वरी सम्मान, पुश्किन सम्मान, केदार सम्मान
विशेषताएँ	:	* अपने परिवेश से, नित्य जीवन के प्रकरणों से काव्य-सत्ता को समेटने की अतिशय क्षमता। * जन साधारण की समझ में आनेवाली भाषा।
देन	:	कविताएँ जन साधारण के जीवन-सरोकारों की व्याख्या।
संप्रति	:	नवभारत (मध्यप्रदेश) के संपादक
	:	सृजन (ग्वालियर) के संपादक
ई-मेल	:	pawankaran64@rediffmail.com

पवन करण की कविता जीवन की पाठशाला से निकली कविता है। ***कहना नहीं आता*** भारत के विविधता भरे समाज के एक बड़े भाग, जो शोषित और उपेक्षित है, का प्रतिनिधित्व करती है।

हाशिए की जनता की आवाज़ कवि पवन करण की लेखनी से....

कहना नहीं आता

तुम्हें कहना नहीं आता
कहने क्यों चले आए
पहले कहना सीखो
फिर अपनी बात कहना
जिनके पास कहने को है
जो कहना चाहते हैं
जिन्हें कहना नहीं आता
मैं उनमें से एक हूँ।

अनुवर्ती कार्य

- *'तुम्हें कहना नहीं आता'*

  'तुम्हें' किन-किनका प्रतिनिधित्व करते हैं ?

  (सहायक संकेत : देखें, परिशिष्ट पृष्ठ संख्या-120 कवि की ई-मेल)

- *'पहले कहना सीखो*

  फिर अपनी बात कहना'

  ऐसा कौन कह रहा है ?

- *'मैं उनमें से एक हूँ'*

  'मैं' किन-किनका प्रतिनिधि है ?

- **कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।**

संगोष्ठी चलाएँ

विषय : हाशिएकृत नारी

- *कोई छात्रा संचालिका बने।*
- *संचालिका विषय प्रस्तुत करे।*
- *चर्चा करके विषय को उपविषयों में बाँटें।*
- *उपविषयों के आधार पर दलों में बँटें।*
- *हर दल अपने उपविषय पर प्रालेख तैयार करे।*
- *हरेक दल अपना प्रालेख प्रस्तुत करे।*
- *प्रालेख की प्रस्तुति पर अन्य दल चर्चा करें जिससे प्रालेख की पुष्टि हो।*
- *प्रत्येक दल की प्रस्तुति और चर्चा के बाद संचालिका संक्षिप्तीकरण करे।*
- *दलों द्वारा प्रस्तुत विचारों को समेकित करके* ***वैयक्तिक आलेख*** *तैयार करे।*
- *दो-चार छात्र आलेख प्रस्तुत करें।*

आलेख की परख, मेरी ओर से

- *भूमिका है।*
- *उपविषयों को अनुच्छेदों में लिखा है।*
- *सभी बिंदुओं को समेकित करके अपना मत प्रकट किया है।*
- *अपने मत का समर्थन किया है।*
- *उपसंहार है।*

शब्दार्थ

अपराध

अपाहिज - अपंग
तैराक - तैरने में कुशल
पंचा - पाँच उँगलियों सहित हथेली का उगला भाग
लड़ाई - झगड़ा
घूँसा - मुट्ठी
ईंट - Bricks
रुख - मनोभाव
जिम्मेदारी - उत्तरदायित्व
मदद - सहायता
पाली - Team
ईर्ष्या - जलन
शामिल होना - भाग लेना
निभाना - निर्वाह करना
सुलगना - आग पकड़ना
अंगारे - चिनगारी
झुलस - सूखकर काला पड़ना
चट्टान - पत्थर का अत्यधिक विशाल खंड
माथा - मस्तक
कातरता - भय
दंड भोगना - सज़ा मिलना
नगण्यता - लघुता
उत्तेजना - जोश
प्रतिद्वंद्विता - प्रतियोगिता
गतिमय - तेज़

समय के साथ हम भी...

Add Account - खाता जोड़ें
Cancel - रद्द करें
Categories - श्रेणियाँ
Chats - बातचीत
Circles - मंडलिया
Editing - ईक्षण
File - संचिका
Format - प्रारूप
Important - महत्वपूर्ण
Input - अंतर्पात
Internet - अंतर्जाल
Know more - अधिक जानें
Next step - अगला चरण
No subject - विषयहीन
Output - बहिर्पात
Privacy - गोपनीयता
Process - प्रक्रिया
Programme - प्रक्रम
Public - सार्वजनिक
Resource - संसाधन
Save - सहेजें
Search - खोज
Sent mail - भेजी गई मेल
Share - साझा करें
Sign out - प्रस्थान
Social - सामाजिक
Spam - अनचाहा
Starred - तारांकित
Symbol - संकेत
Trash - कूड़ेदान
User name - उपयोगकर्ता का नाम

परिशिष्ट

पाठभाग में चर्चित विधाओं की अधिक जानकारी के लिए परिशिष्ट दिया गया है। परिशिष्ट के भाग (क) में कुछ वेब साइटों का पता ज़ोड दिया है। इसका इस्तेमाल करें ताकि सूचना-प्रौद्योगिकी की अनंत संभावनाओं का फ़ायदा उठा सकें। भाग (ख) में विधा के बारे में और लेखक के बारे में दी हुई जानकारी पाठभाग को अच्छे ढंग से समझने में तथा अनुवर्ती कार्यों को सही मायने में निपटाने में मदद देगी।

भाग (क)

सूचना प्रौद्योगिकी के सहारे अध्ययन को सुगम और सरल बनाएँ

सूचना प्रौद्योगिकी के सहारे संसार परिवर्तन की तेज़ रफ़्तार में है। वर्तमान प्रसंग में शिक्षा, उद्योग, कृषि, विज्ञान, तकनीकी जैसे समस्त क्षेत्रों की प्रगति में अंतर्जाल (इंटरनेट) अनिवार्य बन चुका है।

भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में नवीनतम जानकारियाँ पाने का मौका छात्रों को प्रदान करना है। अंतर्जाल के ज़रिए अंगुलियों की दूरी पर छात्र ज्ञान के नए-नए वातायन खोल देंगे। ध्यान दें कि अंतर्जाल का सदुपयोग ही हो।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तिका में चर्चित विभिन्न विधाओं पर अधिक-से-अधिक जानकारी पाने के लिए हिंदी के कई वेब साइटों को काम में ला सकते हैं। इसके ज़रिए हम बदलते समय का परिचय पा सकते हैं।

यहाँ वेब साइटों का पता नमूने के लिए दिया गया है। इनके सहारे आप अध्ययन सामग्रियों को ज़्यादा विस्तार से अपना सकते हैं।

www.hi.bharatdiscovery.org
www.abhivyakthi-hindi.org
www.kavithakosh.org
www.hi.wikipedia.org
www.gadyakosh.org
www.hindisamay.com
www.anubhuti-hindi.org
www.dict.hinkhoj.com
www.laghukatha.com
www.hindikunj.com

इसी प्रकार के कई वेब सइट उपलब्ध हैं। अपने शिक्षकों की मदद से उनको भी काम में लाएँ।

स्कूल की कंप्यूटर-प्रयोगशाला में कुछ भाषाई प्रक्रियाएँ सूचना-प्रौद्योगिकी की सहायता से कर सकते हैं। उनके कुछ नमूने दिए जा रहे हैं।

- वेब साइटों में लघुकथाओं का ई-वाचन करना और चुनी हुई लघुकथाओं का संग्रह तैयार करना।
- लेखकों/कवियों का ई-प्रोफ़ैल तैयार करना
- कविताओं/दोहों का आलाप (ओडियो/वीडियो) संकलित करके सुनाना।
- कविताओं का आलाप करके रिकोर्ड करना और उनमें भावानुकूल दृश्य जोड़ना।
- कोलाज/पोस्टर आदि का निर्माण करना।
- मंचन का डॉक्युमेंटेशन करना।

अनुताप

जयप्रकाश मानस द्वारा सुकेश साहनी का साक्षात्कार

साहनी जी, आपके सम्मुख अभिव्यक्ति के लिए कई विधाएँ थीं। कथा-लेखन के लिए कहानी जैसी स्थापित और मान्यता प्राप्त विधा थी, फिर भी आपने तात्कालीन साहित्यिक दुनिया में लघुकथा जैसी अल्प परिचित विधा को अपनाया, जबकि वह विधा के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए संघर्ष भी कर रही थी। ऐसा क्यों?

बहुत कम लोग जानते हैं कि मेरे लेखन की शुरुआत उपन्यास से हुई। 1970 से 1973 के बीच मैंने आठ उपन्यास लिखे थे जिनमें से तीन प्रकाशित हुए थे। मैं लघुकथा लेखन की ओर किसी योजना के तहत प्रवृत्त नहीं हुआ। अब सोचता हूँ तो यही लगता है कि उस समय मेरे मस्तिष्क में लघुकथा लेखन के लिए उपयुक्त स्नैपशॉट्स (कच्चा माल) कहीं अधिक था जो रचना प्रक्रिया के दौरान पककर लघुकथा के रूप में सामने आया। साहित्य जगत में स्थान बनाना है, लघुकथा को मान्यता प्राप्त है अथवा नहीं जैसी बातों की मुझे समझ ही नहीं थी। हाँ, उन दिनों छप रही लघुकथा को देखकर मन में यह बात ज़रूर आती थी कि मैं इनसे बेहतर लिख सकता हूँ।

आपने लघुकथा लेखन कब शुरू किया, आपकी पहली लघुकथा कौन-सी है? वह कहाँ प्रकाशित हुई?

पहली लघुकथा 'रिश्ते के बीच' 1973 में लिखी थी जो लखनऊ से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक 'विश्वविद्यालय

संदेश' में छपी थी। इसी साप्ताहिक में पहली कहानी 'पागल' भी छपी थी।

लघुकथा को आप मूलतः भारतीय विधा मानते हैं या अन्य कई विधाओं की तरह विदेशी विधा?

मैंने इसपर कभी माथापच्ची नहीं की। लेखक अपने भीतर पक रही उन रचनाओं को लघुकथा के रूप में जन्म देता है, जिनमें कहानी के जैसे विस्तार की आवश्यकता नहीं होती यानी जहाँ लेखक के भीतर की मुकम्मल रचना स्वतः लघुकथा का आकार ग्रहण करती है। विश्व के तमाम प्रसिद्ध लेखकों की छोटी कथारचनाओं का अनुवाद करते हुए यही लगा कि हवा पानी की तरह प्रत्येक लेखक को अपनी बात कहने के लिए लघुकथा की ज़रूरत पड़ी।

लघुकथा को अब परिभाषा के रूप में कोई जानना चाहे तो आपका जवाब क्या होगा?

ऊपर मैंने रचना-प्रक्रिया के दौरान इसे परिभाषित करने का विनम्र प्रयास किया है। सृजनात्मक लेखन के संदर्भ में लगभग सभी विधाओं की परिभाषा एक-सी होती है। लघुकथा के संदर्भ में बारीक खयाली और आकारगत लघुता की बात और जोड़ना चाहूँगा।

लघुकथा को यदि आप स्वतंत्र विधा मानते हैं तो किस तरह?

लघुकथा कहानी का संक्षिप्त रूप नहीं है। लघु आकार की मुकम्मल कृति के साथ–साथ अन्य विशेषताओं के चलते इसे स्वतंत्र विधा मानता हूँ।

साहित्य में लघुकथा की स्थिति को किस तरह से मूल्यांकित किया जा सकता है ?

साहित्य के वार्षिक लेखे-जोखे का ज़िक्र कर मैंने इस ओर संकेत किया है। लघुकथा को प्रतिष्ठा अर्जित करने के लिए अभी लंबा सफ़र तय करना है।

जयशंकर प्रसाद

प्रसाद का जन्म काशी में हुआ था। बाल्यावस्था में पिता के साथ देश के विभिन्न स्थानों की यात्रा करने का उन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ था। बड़े भाई का स्वर्गवास हो जाने से घर का दायित्व उन्हीं पर असमय में ही आ पड़ा था। कुटुंब के ऋणभार से मुक्ति पाने के लिए वे व्यापार करते रहे और साथ ही साहित्यिक-सेवा। अंत में उन्होंने कुछ पैतृक संपत्ति बेचकर रचना-कर्म को ही अपना लक्ष्य बना लिया था। यक्ष्मा रोग के कारण उनकी अकाल मृत्यु हुई।

प्रसाद ने किशोर वय में ही साहित्य-सृजन शुरू किया था और अंत तक लिखते रहे। साहित्य की सभी विधाओं पर उन्होंने पूरी सफलता के साथ कलम चलाई है, फिर भी वे प्रधानतः कवि ही थे। काव्य के क्षेत्र में उन्होंने कलम तोड़ दी। वर्णन-प्रधान कविता के विरुद्‌ध प्रसाद ने ही सर्वप्रथम सूक्ष्म वैयक्तिक अनुभूतियों तथा भावों को काव्य विषय बनाया। वे हिंदी के प्रमुख छायावादी कवि रहे जो रहस्यवादी भी थे। उन्होंने अनुभूतियों को नई भाषा, नई शैली और नई अभिव्यंजना प्रदान की। प्रेम और प्रकृति को उन्होंने रंगीन आयाम प्रदान किए।

मधुऋतु

इस कविता के भाव द्विपक्षी है—प्रकृति सुषमा और प्रेम भंगिमा।

मधुर वसंतऋतु दो दिन के लिए आ गई है। लगता है कि वह पथ भूलकर आ गई है। इस नई व्यथा-साथिन के लिए मैं एक छोटी-सी कुटिया बना दूँगा।

आकाश और धरती के बीच, सबसे अलग, वह प्रेम का नीड़ स्थित है, जो सूखे और फ़ालतू है, उनको जंगल के स्थाई पतझड़ में भागना है।

तब आशा के नए-नए अंकुर झूलेंगे और पल्लव रोमांचित हो जाएँगे। मेरे किसलय का लघु मनोहर संसार किसको बुरा लगेगा। अर्थात् किसीको बुरा नहीं लगेगा।

रोमांचित मलयानिल की लहरें काँपते हुए आएँगी और मन के नयनरूपी कमल को चूमकर जगाएँगी।

मेरे छोटे संसार में पूरब से लाल कुसुम के समान उषा खिलेगी। उषा के, हँसी भरे लाल होठों का रंग दिन को रंगीन बना देगा।

रात की वेला में अंधकार के सागर पार करके चंद्रमा की किरणें आएँगी, धरती पर चाँदनी फैली जाएगी, अंतरिक्ष से प्रकृति के कण-कण में ओस की बूँदों की वर्षा होगी।

इस एकांत सृजन कार्य में कोई बाधा मत डालो और अपने में जो कुछ सुंदर हैं उन्हें इनको दे देने दो।

छायावादी दृष्टि में...

कवि के शून्य हृदय में पथ भूलकर आनेवाली वसंतऋतु के समान अचानक प्रेमिका आ गई। प्रेम व्यथा-प्रधान है, तो कवि व्यथा-साथिन को अपने मन में छोटी कुटिया बना देता है। आकाश और धरती के बीच प्रेम का जो निवास है भावुक प्रेमी वही रहेंगे। प्रेम-विहीन सूखे तिनके जैसे लोगों को इस प्रेम निवास से अलग किसी सूखे में जाना है। तब इस प्रेममय वातावरण में आके नए नए अंकुर फूटेंगे और प्रेमी रोमांचित हो जाएँगे। प्रेम का मधुर मोहक संसार किसी को बुरा नहीं लगेगा। वहाँ प्रेम पुलकित प्रेमी मलयानिल के समान आएगा और प्रेमिका के कमल-नयन पर चुंबन करेगा। प्रेमी की इस रागात्मक दुनिया में पूरब से सौंदर्य की लालिमा फैलाती हुई प्रेमिका आएगी जैसे प्रभात की वेला में उषा की लालिमा। प्रेम का संसार हमेशा रोशनी का संसार है और रात की वेला में प्रेमानुभूतियों को जगाकर चाँदनी आएगी और प्रकृति ओस की बूँदों की वर्षा करेगी। प्रेम के इस एकांत सृजन कार्य में किसीको बाधा उपस्थित नहीं करनी है और अपने में जो कुछ सुंदर है उसे प्रेम-युग्मों को देना है।

सूचना का अधिकार अधिनियम

सूचना का अधिकार अधिनियम हर नागरिक को कुछ अनमोल अधिकार देता है। इन अधिकारों से अवगत होने के लिए यह गीत सहायक रहेगा।

वोट दिया सरकार बनाई, लेखा-जोखा माँगो भाई।
कितना खर्च और कहाँ पर, क्या सुविधा हमको पहुँचाई।।
जानें कैसे यह सब हाल? सूचना के अधिकार का करें इस्तेमाल।
यह सब क्या है हमें बताएँ, ऐसी सूचना कहाँ से पाएँ?

विस्तार से हमको सब समझायें, ताकि हम न धक्का खाएँ।
हर ऑफिस में एक अधिकारी, देता है यह जानकारी,
फार्म भरकर उसपर जाएँ, फीस के रुपए जमा कराएँ,
तीस दिन में उत्तर पाएँ, और अपनी जानकारी बढ़ाएँ।

क्या-क्या इनसे पूछा जाए? कुछ उदाहरण से बतलाएँ,
मेरा राशन किसने खाया? लाइसेंस क्यों नहीं बनाया?
पानी घर-घर क्यों नहीं आया? सड़क मरम्मत कब-कब करवाई?
कितनी शिकायत दफ़्तर में आई, निवारण क्यों नहीं किया?

ऐसे सैकड़ों प्रश्न उठाओ, और क्रांति सरकार में लाओ।
कहने को सरल है जितना, पर वास्तविक है यह कितना?
जिनकी समझ में उत्तर नहीं आता, अपील का दरवाज़ा खटखटाया,
अपील में उनकी हुई सुनवाई, हज़ारों ने इससे राहत पाई।

इसका और क्या है लाभ? हमको बताओ भाई साहब।
जवाबदेही से डरते हैं सब, कार्यकुशलता बढ़ गई है अब।
पारदर्शिता इससे हैं आई, जनता भी हुई जागृत भाई।
यह है इसका अच्छा लाभ, तुम भी आवेदन अब दो जनाब।

प्रेमचंद

विश्व-स्तर के महान कथाकार प्रेमचंद हिंदी-कथा-साहित्य के चिर गौरव हैं। अभाव-ग्रस्त जीवन और पारिवारिक उलझनों से लड़ते हुए प्रेमचंद ने उच्च शिक्षा प्राप्त की और साहित्य-सर्जना की। उन्होंने हिंदी कहानी को अपना वास्तविक स्वरूप प्रदान किया और मानव-जीवन को कथा का विषय चुना। राजा-राणी और ऐंद्रजालिक कहानियों से आहत हिंदी कथासाहित्य में प्रेमचंद ने किसान, मज़दूर जैसे साधारण पीड़ित जन की आवाज़ बुलंद की। भारत की संपूर्ण समस्याओं को उन्होंने अपनी सर्जना में समावेश किया। इन्होंने लगभग तीन सौ कहानियाँ रची हैं। कफ़न, पूस

की रात, ठाकुर का कुआँ, शतरंज के खिलाड़ी आदि उनकी विश्वस्तरीय कहानियाँ हैं। सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, निर्मला, कर्मभूमि और गोदान उनके लोकप्रिय उपन्यास हैं। ग्रामीण-जीवन की जितनी सहजता और असलियत उनकी रचनाओं में है वह अन्यत्र दुर्लभ है। भारतीय नारी की व्यथा-कथा हिंदी में सर्वप्रथम प्रेमचंद की लेखनी से निकली है। उनकी रचनाएँ अनश्वर हैं, उनकी प्रासंगिकता सर्वकालीन है।

चित्रा मुद्गल

समकालीन हिंदी साहित्य में बेहद चर्चित एवं सम्मानित लेखिका है चित्रा मुद्गल। बात कथा साहित्य की हो या नाट्य-रूपांतर की, अपने रचनाकर्मों में चित्रा मुद्गल एक विनम्र लेकिन सजग लेखिका है। अपनी सर्जनात्मक अभिव्यक्ति को हिंदी साहित्य के दायरे से बाहर निकाल ले जाने की सफल कोशिश उन्होंने की है। चित्रा मुद्गल नाट्य-रूपांतरण में भी प्रवीण है। प्रेमचंद की महत्वपूर्ण कहानियों का इन्होंने नाट्य-रूपांतरण किया है। व्यास सम्मान प्राप्त प्रथम हिंदी लेखिका है चित्रा मुद्गल। निस्संदेह चित्रा मुद्गल हिंदी की अग्रणी लेखिका है।

चित्रा मुद्गल की सर्जना में नारी-विमर्श तो ज़रूर है, लेकिन वे कट्टर नारीवादी कभी नहीं रही। उत्पीड़ित नारी जीवन के विभिन्न आयामों का इनकी रचनाओं में मार्मिक चित्रण है। अपने अस्तित्व के लिए लड़ती नारियाँ उनकी कहानियों में सर्वत्र मिलती हैं।

चित्रा मुद्गल की ई-मेल

संयोग से वह 2005 का समय था। पूरा देश कथा सम्राट प्रेमचंद की 125 वीं जयंती मना रहा था। मैं एक स्कूल के वार्षिक उत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थी। बच्चों के नयनाभिराम नृत्य और गीत संगीत ने मन को बाँध लिया। लेकिन संतुष्टि कुछ अधूरी-सी महसूस हुई। कार्यक्रम की समाप्ति पर मैंने प्राचार्या से दिल की बात कह दी। नाटकों में आपने बच्चों के लिए 'चोरी का बगीचा' और 'किंग लियर' क्यों चुना? क्यों नहीं प्रेमचंद की किसी कहानी पर नाटक करवाया। खिन्न स्वर में उनका उत्तर था हम प्रेमचंद की किसी कहानी पर बच्चों से नाटक करवाना चाहते थे। उनकी किसी कहानी का नाट्य रूपांतर हमें उपलब्ध ही नहीं हुआ। प्रशिक्षण के लिए अनुबंधित नाट्य निदेशक ने स्वयं ही इन दोनों नाटकों को मंचित करने का फैसला किया। उसी क्षण दिमाग में विचार कौंधा। गलती हम लेखकों की है। हम विदेशी लेखकों की कहानियों का नाट्यरूपांतर या नाटकों का मंचन खुशी-खुशी करते हैं। किंतु प्रेमचंद, पोट्टेकाट, फ़कीर मोहन, सेनापति आदि अनेक भारतीय भाषाओं के लेखकों की कहानियों का नाट्य रूपांतर को विशेष महत्व नहीं देते। ज़रूरी नहीं कि अन्य लेखक मेरी इस बात से सहमत हो। मैंने चुनौती ग्रहण की। कथा सम्राट प्रेमचंद की 125 वीं जयंती पर उन्हें मेरी यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उसीका नतीजा है। उनकी बहुचर्चित और अपेक्षाकृत कम चर्चित कहानियों से मेरी मनपसंद इक्कीस कहानियों का नाट्यरूपांतर जिनका प्रकाशन तीन खंड़ों में राजपाल एंड

सन्स के प्रकाशक स्वर्गीय विश्वनाथ जी ने सहर्ष किया। 'जुलूस' उन्हीं कहानियों में से एक मील की पत्थर है। हमारी साझी संस्कृति को अनमोल विरासत को रूपायित करती हुई, उसकी शक्ति की परिवर्तनकारी भूमिका रेखांकित करती हुई, साबित करती हुई, देश को पराधीनता से मुक्त कराने का सपना देखनेवाले स्वराजी सिर्फ स्वराजी थे। जिस वक्त मैं 'जुलूस' का नाट्यरूपांतर कर रही थी, दृश्य विभाजन करते हुए तीन संकटों से घिरी हुई थी। पहला नाट्य रूपांतर कहानी की दृष्टि की बहुआयामिता को क्षरित न होने देता। दूसरा उनके संवादों के भाषा-सौष्ठव की विशेषता का ज्यों का त्यों बरकार रखता। तीसरा, प्रेमचंद की कहानियों के रूपांतरण में प्रेमचंद को उपस्थित रखना। यह छूट मैंने नाट्य निदेशिका को दी है। वह उसकी प्रस्तुति मनचाही नाट्यशैली में कर सकता है।

एक स्थान पर आकर मैं इस कदर भर्रा आई थी कि उस दृश्य को लिखते हुए मुझे तीन दिन लग गए। 'जुलूस' के दृश्य 6 का वह प्रसंग जिसमें अंग्रेज़ों की दमनकारी कार्यशैली के अनुशासन में ढला हुआ दारोगा बीरबल सिंह अपने मातहत सिपाही से शवयात्रा के जुलूस में व्याप्त सन्नाटे के विषय में जिज्ञासा करता है।

सिपाही का उत्तर स्तब्ध करनेवाला है। 'हुज़ूर, वही इब्राहिम अली आपकी ही लाठी से तो उनका सिर फटा था। मरते समय वसीयत कर गए हैं। मेरी लाश को गंगा में नहलाकर दफ़नाए जाए और मेरी मज़ार पर स्वराज का झंडा खड़ा कर दिया जाए।'

'जुलूस' के नायक इब्राहिम अली की यह वसीयत सिर्फ़ आज़ादी के दीवानों के लिए ही नहीं लिखी गई थी स्वातंत्र्योत्तर भारत की पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए लिखी गई थी ताकि वह आज़ादी की कीमत समझ सकें, समझ सकें कि किसी भी राष्ट्र की आज़ादी जाति-धर्म-संप्रदाय से ऊपर होती है।

जुलूस - कथासार

'जुलूस' स्वतंत्रता-आंदोलन से संबंधित एक भावपूर्ण आदर्शात्मक कहानी है। दारोगा बीरबल सिंह, उसकी पत्नी मिट्ठन बाई और स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक इब्राहिम अली आदि इस कहानी के प्रमुख पात्र हैं। स्वतंत्रता आंदोलन ज़ोरों पर था। दारोगा बीरबल सिंह इस आंदोलन के विघातक के रूप में खड़ा था जो अंग्रेज़ी सरकार का दास था। लेकिन उसकी पत्नी मिट्ठन बाई अथ से इति तक देशप्रेम से भरी हुई औरत थी। इस विषय पर पति के साथ उसकी अनबन थी। लेकिन बीरबल सारे स्वदेशी आंदोलन को समाप्त करने का उपाय सोच रहा था, ताकि शासकों की कृपा उनपर पड़े। लेकिन इब्राहिम देश के लिए समर्पित एक आदर्श देशप्रेमी था। उस दिन स्वतंत्रता आंदोलन की पुष्टि के लिए इब्राहीम के नेतृत्व में जो जुलूस आगे बढ़ रहा था, बीरबल सिंह ने अंग्रेज़ी सेना के हथियारों का प्रयोग किया और इब्राहीम मारा गया, एक देश-भक्त का देश के लिए आत्म बलिदान।

जनता दुखी थी, लेकिन बीरबल मस्त था और सरकार ने उसकी प्रशंसा की। पत्नी बीरबल से बिगड़ गई और उसने पति

को सबसे बड़ा अपराधी घोषित किया। और कहा कि स्वतंत्रता के लिए प्रयत्नरत लोगों में सुशिक्षित, व्यापारी, अमीर सब हैं। स्वतंत्रता के सामने शिक्षा, धन, ऊँचे-ऊँचे पद आदि उनके लिए निरर्थक हैं। पत्नी की शिकायत दारोगा जब सुन रहा था तब सरकार का एक आज्ञा-पत्र उसे मिला कि इब्राहिम की लाश को दफनाने के लिए ले जाते समय आयोजित जुलूस को रोके। लेकिन बीरबल कुछ कर न पाया। हज़ारों-हज़ारों लोगों की देश-भक्ति, देश-सेवा और राष्ट्रीय-चेतना से लज्जित बीरबल ने समझा कि इब्राहीम के प्रति उसका जघन्य व्यवहार था। जुलूस आगे बढ़ा, बीरबल देखता रहा। दफनाने के बाद इब्राहिम की स्तुति के साथ चले गए। मिट्ठन बाई सीधे इब्राहीम अली के घर पहुँच गई। इब्राहिम की बेवा के पास अपने पति दारोगा बीरबल को देख वह स्तंभित रह गई। पश्चाताप-विवश बीरबल इब्राहिम की बेवा से माफी माँगने आया था।

यही कहानी का सार है। चित्रा मुद्गल ने संपूर्ण कहानी का नाट्यरूपांतरण किया है। लेकिन इस पुस्तक में नाट्यरूपांतर का प्रारंभिक अंश मात्र दिया गया है। प्रस्तुत कहानी की सबसे बड़ी विशेषता दारोगा बीरबल का मन परिवर्तन है। आज़ादी के आंदोलन का विध्वंसक अंत में उसका झंडाबरदार हो जाता है। इब्राहिम अली का आत्मबलिदान आज भी पाठकों के दिल में राष्ट्रीय-भावना के बीज बोता है, देशप्रेम की लहरें उठाता है। प्रेमचंद ने इस बात का संकेत किया है कि आज़ादी के आंदोलन में हिंदू-मुसलमान का कोई भेद-भाव नहीं था। अपने शरीर को गंगा में नहलाकर दफ़नाने की इब्राहिम अली की इच्छा धर्मनिरपेक्ष प्रेमचंद की इच्छा है, शुद्ध देशप्रेम का एक अनमोल आदर्श। अतः जुलूस की चिर प्रासंगिकता है।

कबीरदास

कबीरदास हिंदी साहित्य के क्रांतिकारी भक्त कवि हैं। वे काशी में रहते थे और जुलाहे का काम करते थे। हिंदी साहित्य में यह बात प्रसिद्ध है कि कबीर अनपढ़ थे, लेकिन ज्ञानी थे। वैष्णव संप्रदाय के आचार्य रामानंद का शिष्यत्व ग्रहण करके भी कबीर जाति-पाँति के भेदभाव के निकट नहीं गए, बल्कि उसे दूर करने के प्रयत्न में लगे रहे। उन्होंने अपने समय में प्रचलित सभी धर्मों की अच्छाइयों को ग्रहण किया और बुराइयों का खंडन किया।

कबीर की कविता 'बीजक' साखी, सबद और रमैनी के नाम तीन भागों में विभक्त है। उनकी कविता में गुरु-सेवा, राम-नाम, सत्संग, नीति, भक्ति, समाज-सुधार आदि कई विषयों के भाव समन्वित हैं। कबीर घूम-घूम कर साधु-संतों का सत्संग करते थे। इस कारण उनकी भाषा में विभिन्न प्रदेशों की भाषाओं एवं बोलियों के शब्द घुल-मिल गए। अतः कबीर ने जनभाषा का प्रयोग किया है।

फिल्मी समीक्षा

फिल्मी समीक्षा साहित्यिक समीक्षा से भिन्न प्रकार की समीक्षा है यद्यपि साहित्य और फिल्म का संबंध तो है। फिल्म को सर्वश्रेष्ठ कला कहा गया है क्योंकि उसमें विभिन्न कलाओं का मिश्रण है। उसमें कथा, पटकथा, अभिनय, छायांकन, साज-सज्जा, गीत, संगीत, ध्वन्यांकन, पार्श्वगायन, नृत्य, निदेशन आदि विभिन्न कलाओं का संगम है। फिल्म में कला का अंश जितना है, उतना तकनीक का भी है। सिनेमा कला और तकनीक का मिश्रण है।

फिल्मी समीक्षा के अवसर पर समीक्षक को आलोच्य फिल्म का एक संक्षिप्त परिचय देना है और आवश्यक है तो फिल्म का संक्षिप्त कथासार देना है। कथावस्तु विश्लेषण में पटकथा की भूमिका के गुण-दोषों का विवेचन करना है। पटकथा के साथ संवाद योजना की भी समीक्षा करनी है कि संवाद कथावस्तु, विषय, पात्र एवं भाव के अनुकूल हो, उसमें ज़िंदगी की गंध हो, सशक्त एवं प्रभावशाली हो। फिर अभिनेताओं के अभिनय का विवेचन करना है कि उन्होंने अपने अपने पात्रों के प्रति न्याय किया है या नहीं। छायांकन की निपुणता और संपादन-कला की समीक्षा करनी है। फिर नृत्य, संगीत आदि के आस्वादन क्षमता पर विचार करना है। फिल्म संघर्षात्मक एवं विस्फोटात्मक है तो इस संघर्ष और विस्फोट का भी मूल्यांकन करना है। अंत में फिल्म निदेशन का, निदेशक की क्षमता का विवेचन करना है।

संपादकीय

संपादकीय समाचार पत्र या अन्य किसी पत्रिका का अभिमत प्रकट करनेवाला एक लेख है जो मुख्य रूप से संपादक द्‌वारा लिखा जाता है। कभी कभी संपादक के निर्देश पर सहसंपादक लिखता है। संपादकीय सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और अन्य समस्याओं पर अपना मंतव्य प्रकट करता है। संपादकीय के लिए हर पत्र-पत्रिका में एक निश्चित जगह है, वहीं पर संपादकीय छपा जाता है। संपादकीय अत्यंत महत्वपूर्ण है और संपादक को चिंतन-मनन करके लेकिन सहज एवं स्वाभाविक ढंग से पाठकों के सम्मुख रखना है। जनहित और जनमत संपादकीय का विषय होना चाहिए। दरअसल संपादकीय जनमत को अधिकारियों तक पहुँचाने का सफल प्रयत्न करता है। संपादकीय के द्‌वारा पत्र अपना अभिमत प्रकट करता है। संपादकीय एक आलेख जैसा है,

उसका निश्चित प्रारंभ एवं शानदार अंत होता है। संपादकीय विषय केंद्रित या समस्या केंद्रित होना चाहिए। समकालीन घटनाओं और समस्याओं पर ही संपादकीय लिखा जाता है।

संपादकीय लेखन-प्रक्रिया

- एक चर्चित समकालीन समस्या या घटना को चुन लेना।
- आवश्यक जानकारी और तथ्यों का समाहार करना।
- मर्म छूटे बिना विषय को संक्षिप्त रूप में प्रकट करना।
- विषय की गरिमा और प्रधानता को स्पष्ट करना।
- जिस निर्णय पर पहुँचना चाहता है उसके अनुसार तर्क प्रस्तुत करना।
- जिस विषय का समर्थन करना है उसके विरोधी विचारों का खंडन करना।
- विषयानुकूल तथ्यों का बार-बार समर्थन करना।
- एक संभावित हल को ढूँढ़ निकालना और सरल शब्दों में प्रकट करना।
- विषयोचित आकर्षक नामकरण करना।
- अंत अत्यंत प्रभावशाली होना।
- संपादकीय रोचक एवं पठनीय होना।

रामधारी सिंह दिनकर

हिंदी काव्य-जगत में दिनकर राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात है। लेकिन उनकी भावधारा विभिन्न दिशाओं की ओर उन्मुख रही है, जिसमें वैयक्तिक प्रेम, प्रगति-चिंतन, समस्या-चिंतन, हास्य-व्यंग्य, राष्ट्रीयता और मानवतावाद प्रमुख हैं। दिनकर की प्रारंभिक

रचनाओं में प्रेम और सौंदर्य की अभिव्यक्ति है। कल्पनाजन्य छायावाद युग के अंत में दिनकर ने यथार्थ को अधिक प्रश्रय दिया और प्रगतिशीलता को स्वीकारा। दिनकर नवीनता के प्रति आग्रह करनेवाले कवि हैं। परंतु संस्कृति की प्राचीनता पर कवि को गर्व है। प्रणय की राग और क्रांति की आग उनकी रचनाओं में है। दिनकर की काव्यभाषा जन-चेतना की वाहिका है। रेणुका, हुँकार, कुरुक्षेत्र, रश्मीरथी, उर्वशी आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

'चाँद और कवि' नीलकुसुम काव्य-संग्रह से उद्धृत कविता है। कवि-कलाकारों को स्वप्नदर्शी कहकर यथार्थ-दुनिया से दूर रखने का प्रयास तो देखा जाता है, लेकिन दिनकर की राय में कवि के सपने कठोर-से-कठोर यथार्थ से भी दृढ़ हैं। कवि-कलाकारों के सपने ही यथार्थ का रूप धारण करते हैं और उन सपनों की नींव पर ही समाज का भविष्य खड़ा किया जाता है। बाधाओं को भी जीतने की प्रेरणा सपनों और अभिलाषाओं से मिलती है।

रात में गगन पर आँखें गड़ाकर बैठे हुए कवि को लगा कि धरती के मानव की विचित्र आदत को देख आसमान का चाँद भी आश्चर्य में पड़ जाता है। चाँद पूछ लेता है कि यह मानव क्यों स्वयं समस्याएँ बना लेता है और उनमें फँसकर हमेशा बेचैन रहता है। चाँद की दृष्टि में यह मानव पागल का-सा जीवन बिता रहा है। पानी के बुलबुलों की तरह आदमी के स्वप्न बनते और टूटते हैं। बुलबुलों से खेलकर कविता लिखनेवाले मानव पर चाँद उपहास करता है। चाँद की व्यंग्य भरी वाणी सुनकर कवि चुप रहे, लेकिन उनका कविमन मुखर उठा। अपने को केवल पानी या पानी के बुलबुले मानना उन्हें स्वीकार नहीं। कवि आग में सपनों को गलाकर लोहा बना लेता है और लोहे पर नव-निर्माण की नींव

खड़ा कर देता है। मनु-पुत्र, मानव में असीम शक्ति है। उसकी कल्पना तेज़ धारवाली होती है। विचारों के हाथों में ही नहीं, सपनों के हाथों में भी तीक्ष्ण तलवार रहती है। स्वप्नवाले मानव एक-न-एक दिन स्वर्ग को भी जीत लेंगे। अर्थात भौतिक जगत में उत्पन्न बाधाओं को टालकर आगे बढ़ने का साहस कवि की कल्पना से मानव को प्राप्त होता है।

अनंत गोपाल शेवड़े

अनंत गोपाल शेवड़े स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी रहे हैं। 'नागपुर टाइम्स' का संपादन करते हुए आपने अपनी संपादन कला का परिचय दिया है। आपके द्‌वारा लिखित निशागीत, ज्वालामुखी, मंगला, तीसरी भूख, कोरे कागज़, दूर के ढोल आदि कई रचनाएँ प्रकाशित हैं। जीवन के महत्वपूर्ण और प्रेरक प्रसंगों को संजोकर आपने उन्हें लेखों में निबद्‌ध किया है। सरल, सुबोध भाषा के द्‌वारा वे अपने विचारों को संप्रेषित करते हैं।

'आनंद की फुलझड़ियाँ' लेखक के प्रेरक अनुभवों से युक्त रचना है। जो आदमी अपने स्वार्थ को छोड़कर परमार्थ के लिए कार्य करता है वह महान होता है। मनुष्यरूप धारण करके हम यदि किसी गरीब, असहाय, व्यग्र, बेचैन व्यक्ति को अपनी मृदुभाषा एवं आचरण से क्षण मात्र के लिए ही सुख पहुँचा सकें तो हमारा जीवन धन्य हो जाए। जगह-जगह जो हरे-भरे वृक्ष दिखाई देते हैं, वे पूर्वजों के उस कार्य के फल हैं जो दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाने के लिए किए गए हैं। लेखक ने गाड़ी पर से सुंदर फलों के बीज फेंकती हुई महिला को देखा जो संधियों में वृक्ष उगाना चाहती थी,अमरीका के प्रेसिडेंट बेंजामिन फ्रैंकलीन ने 20 डॉलर देकर एक विद्‌यार्थी की मदद की थी, मदद की वह चेन आज भी चल रही है। टिकट लेने वाले यात्रियों की छीटा-कसी के बीच

लेखक ने टिकट बाबू की परेशानियों को समझकर जो मधुर बात कही उसका गहरा प्रभाव टिकट बाबू पर पड़ा। उसने लेखक को फ़ौरन टिकट दे दिया और उसका परिचय भी जानना चाहा। इसीतरह बैंक के क्लर्क की राइटिंग की प्रशंसा करके लेखक ने उसकी सहानुभूति प्राप्त की।

मानव समाज में एक दूसरे के गुणों की परख करने तथा अच्छे स्वभाव, कर्म, गुण की तारीफ़ करने से एक दूसरे के प्रति सहानुभूति जगती है। संबंध मधुर होते हैं। लेख की भाषा-शैली परिमार्जित तथा प्रभावशाली है।

चंद्रकांत देवताले

चंद्रकांत देवताले पुरानी पीढ़ी के अग्रणी, समादरणीय कवि हैं जिनकी चिर नूतन विचारधारा है। उन्होंने हिंदी साहित्य में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। फिर शिक्षा विभाग के तहत विभिन्न जगहों पर अध्यापन कार्य किया और अपनी सर्जना को ज़ारी रखा। अवकाश-प्राप्ति के बाद पत्रकारिता एवं स्वतंत्र लेखन में व्यस्त हैं।

चंद्रकांत देवताले की कविता का स्रोत वर्तमान समाज और परिवेश है जिनकी विद्रूपताओं पर उन्होंने कठोर प्रहार किया। गत चार दशकों से हिंदी कविता में अपना वर्चस्व बनाए रखनेवाले देवताले ने विसंगतियों और विकलताओं के साथ-साथ अपनी कविता में मानवीयता भी प्रतिष्ठित की है और विभिन्न मायनों में उसकी अभिव्यक्ति की है। उनकी कविता में एक ओर भ्रष्ट-व्यवस्था एवं राजनीति पर सख्त विरोध है तो दूसरी ओर मानवीय अनुभूतियों की आर्द्रता भी। उनकी रचनाओं में अनुभूतियों की कोमलता और असंगतियों की विद्रूपता है।

चंद्रकांत देवताले की ई-मेल

किसी भी कविता को हर पाठक अपनी तरह से पढ़ता-गुनता है। अर्थ-ग्रहण की प्रक्रिया में उसके पूर्वानुभव,स्मृतियाँ, परिवेश और समझ उसके भागीदार होते हैं। कविता को महसूस करते, उससे झंकृत होते पाठक की चेतना प्रभावित होती है, किंतु इसका कोई तयशुदा प्रतिमान नहीं है। यहाँ पार्क में वर्षों पुरानी एक बैंच है पत्थर की। जिसपर, जिसके आसपास कितनी पीढ़ियों की न जाने कितनी सुख-दुख, प्रेम-अवसाद, विश्राम-उत्साह की संवेदनशील छवियाँ-स्मृतियाँ हैं। जाने कब बनी, किससे बनवाई... कौन जाने इतिहास क्या?

हमारे आज के फितना-फसादवाले विकट समय में किसी भी नाकुछ, नामालूम मुद्दे को ले स्वार्थीतत्व कुछ भी उपद्रव कर रहे हैं।

पार्क में भटकते कविता के वाचक को भी शायद ऐसी ही आशंका विकल कर रही होगी । इतना ही।

चंद्रकांत देवताले

एफ - 2/7, शक्तिनगर,

उज्जैन-456010 (म.प्र.)

अनुवाद

अनुवाद शब्द संस्कृत के वद् धातु से बना है। इसमें 'अनु' उपसर्ग है, और वद् का मतलब है कहना। इसप्रकार अनुवाद का अर्थ बना पुनःकथन। एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में फिर से कहना अनुवाद है।

अनुवाद में दो भाषाओं का होना ज़रूरी है। अनुवाद विज्ञान में इन दो भाषाओं को स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा की संज्ञा दी गई है। जिस भाषा की सामग्री अनूदित होती है, वह स्रोतभाषा है और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है वह लक्ष्यभाषा है।

अनुवादक को अनुवाद करते समय दोनों भाषाओं की वाक्यसंरचना पर ध्यान देना चाहिए। प्रत्येक भाषा पर उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव पड़ता है। अनुवादक को इसकी पहचान करनी चाहिए और लक्ष्यभाषा के अनुरूप उसको ढालने की कोशिश करनी चाहिए। अनुवादक को शब्दों के अर्थ से बढ़कर अभिव्यक्ति पर अधिक ध्यान देना है।

अनुवाद सर्जनात्मक है, चाहे इसपर अनुकरण का स्पर्श हो। सफल अनुवाद वह है, जब अनुवाद पढ़ते समय पाठक को न लगे कि वह अनुवाद पढ़ रहा है।

यशपाल

यशपाल क्रांतिकारी साहित्यकार रहे। विद्यार्थी जीवन में यशपाल स्वाधीनता संग्राम से प्रभावित हुए और कॉलेज छोड़ गए। इन्हीं दिनों उन्हें वर्षों जेल की भीषण यातनाएँ भोगनी पड़ीं।

जेल से छूटने के बाद सबसे पहले 'पिंजड़े की उड़ान' नाम से अपनी कहानियों का एक संग्रह प्रकाशित किया और तब से अपना सारा जीवन साहित्य को अर्पित कर दिया। कहानियाँ, उपन्यास, व्यंग्य, निबंध आदि अनेक विधाओं में साहित्य रचना कर यशपाल हिंदी के शीर्षस्थ कथाकारों की पंक्ति में शामिल हो गए।

मार्क्सवादी विचार-दर्शन से प्रभावित होने के कारण सामाजिक प्रगति और जीवन संघर्षों में उनकी अटूट आस्था थी।

उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, शोषण एवं अंधविश्वास के विरुद्ध आजीवन प्रभावशाली संघर्ष किया।

दुख

दुख कहानी में असली दुख की सही पहचान है और नकली दुख पर व्यंग्य प्रहार भी। दिलीप और हेमा संपन्न परिवार के पति-पत्नी हैं। हेमा पर संपन्नता का गर्व प्रबल है। एक दिन वह अपने पति से बिगड़ कर चली जाती है। हेमा बार-बार अपने को दुखी कहा करती थी जो नहीं जानती है कि दुख का रूप कितना भयानक और विकराल है। दिलीप ने खोमचेवाले बालक के घर के भीतर जो करुणामय दृश्य देखा था वही असली दुख था। आधी रात की वेला में असह्य ठंड में चीज़ें बेचनेवाले, दुख की टीस को भोगनेवाले उस लड़के की कोई शिकायत नहीं। भूखे रहकर बेटे को रूखी रोटियाँ खिलाने का प्रयत्न करनेवाली माँ के मुख पर वेदना की व्यथाएँ उभर आती हैं, साथ ही साथ वात्सल्य की रेखाएँ भी। हेमा का अमीरी-प्रदत्त नकली दुख है और उस बालक का अभाव-प्रदत्त असली दुख। हेमा के पत्र को फाड़ते हुए यशपाल ने पैसेवालों के सुखद दुख का सख़्त विरोध किया है।

उदय प्रकाश

समकालीन कथा-जगत के शिखरस्थ कहानीकार हैं उदय प्रकाश। उनकी कहानियों में आठवें दशक से शुरू होकर वर्तमान समय तक व्याप्त विभिन्न विसंगतियों का लेखा-जोखा है। कथ्य स्तर पर उनकी कहानियाँ विविधता बरतती हैं, हृदय, बुद्धि और भाव का अपूर्व संगम उनमें है। उपभोक्ता-संस्कार, मृत-संवेदना, भ्रष्ट न्याय-व्यवस्था, पादसेवा, नारी उत्पीड़न जैसी उत्तराधुनिक संस्कृति की विकल मनोवृत्तियाँ उदय प्रकाश की कहानियों को

चर्चित बनाती हैं। उनकी कहानियों में कपट राजनीति को खुलकर दिखाने की कोशिश हुई है, परंतु वे राजनीतिक कहानीकार नहीं हैं। उत्तराधुनिक समय को संप्रेषित करने में उदय प्रकाश की कहानियाँ सतर्क हैं।

अपराध

वर्तमान हिंदी साहित्य के सर्वोच्च कथाकार उदय प्रकाश की आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई भाव-प्रधान कहानी है अपराध। इसमें दो भाइयों के आपसी संबंध की कथा है। बड़े भाई का छोटे भाई के प्रति जो अपनापन था उसे समझने में छोटा भाई असमर्थ रहा। गहन चिंतन-मनन की उसकी उम्र नहीं थी। बड़े भाई के प्रति उसका संबंध शिथिल था। बड़े भाई को कठघरे में खड़ा करने को छोटे भाई ने पिता जी से झूठ बोला कि बड़े भाई ने उसे खड्ब्बल से मारा है। अपंग बड़े भाई को पिता ने दंड भी दिया। तब उसके चेहरे का कातर भाव अनेक वर्षों बाद भी छोटे भाई के दिल को निचोड़ रहा था। अपराध बोध से छोटा भाई आहत हुए। वर्षों बाद भी यह घटना छोटे भाई को सताती थी। लेकिन इस घटना को बड़े भाई भूल चुके थे, इसलिए छोटा भाई माफ़ी माँगने में भी असमर्थ रह गया। उदय ıकाश की प्रेषणीय भाषाशैली पाठकों को हठात आकृष्ट करती है और उनकी कहानी की भावुकता में पाठकों के दिल भी करुणार्द्र हो जाते हैं।

पारिभाषिक शब्दावली

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ सूचित करनेवाले शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहते हैं। पारिभाषिक शब्द को अंग्रेज़ी में Technical Terminology कहते हैं। जहाँ साधारण भाषा

व्यापक रहती है वहाँ वैज्ञानिक भाषा विशेष क्षेत्र पर केंद्रित हुआ करती है। सामान्यतः भाषा सहज रूप से सजीव एवं नानार्थकता की ओर उन्मुख रहती है। मगर विज्ञान के शब्द निश्चित अर्थ रखते हैं।

प्रयोग के आधार पर तीन प्रकार के पारिभाषिक शब्द पाए जाते हैं–

1. सामान्य 2. अर्धपारिभाषिक 3. पूर्णपारिभाषिक

पारिभाषिक शब्दावली में अर्थ की दृष्टि से स्पष्टता सुबोधता एवं परस्पर सुनिश्चितता होनी चाहिए। अपवर्तिता अनिवार्य है। एक ही शब्द अनेक विज्ञान शाखाओं में प्रयुक्त हो सकता है। किंतु पारिभाषिक शब्द के रूप में एक विज्ञान में एक शब्द का एक ही अर्थ होना चाहिए। पाठ्यवस्तु के रूप में कंप्यूटर तथा इंटरनेट से संबंधित पारिभाषिक शब्दों पर बल दिया गया है।

पवन करण

पवनकरण हिंदी की युवापीढ़ी के प्रतिनिधि सलामी कवि हैं, जीवन के हर क्षण में, हर चाल में, पवन करण कविता को तलाशते नज़र आते हैं। कवि की कविता के चित्रपट में झोंपड़ियों में भी पैर पसारनेवाले बाज़ार तंत्र का, गेहूँ के दाने के लिए तरसते किसान का, भय और आतंक के कारण कहना न आनेवाले आम आदमी का, उत्पीड़न से अपनी सुरक्षा खोजनेवाली वर्तमान नारी का, उत्तराधुनिक निरर्थक प्रेम का साकार चित्र है। पवन की कविता जनसाधारण के जीवन की व्याख्या है, इसलिए भाषा भी साधारण जन की समझ में आनेवाली है।

पवन करण की ई-मेल

'कहना' (कहना नहीं आता) कविता भारत के विविधता भरे समाज के एक बड़े भाग का, जो शोषित और उपेक्षित है, प्रतिनिधित्व करती है। समाज के भीतर का वह समाज जो संख्या में तो ज्यादा, लगभग 80 प्रतिशत है। किंतु उसके पास अपने जीवन के लिए ज़रूरी संसाधन 20 प्रतिशत भी नहीं है। वह हाशिए पर है । सही मायनों में भारतीय समाज की यह वह आवाज़ है जिसमें उसकी पीड़ा और व्यथा शामिल है। किंतु जिसे अपनी बात करने का अवसर भी समाज का शक्तिशाली वर्ग नहीं देता। जो अपनी बात कहना चाहता है मगर उसे कहने नहीं दिया जाता। वह कहने की कोशिश करता है तो दुत्कारते हुए कहा जाता है तुम्हें कहना कहाँ आता है जाओ पहले कहना सीखकर आओ। तब आकर अपनी बात कहना। जबकि पीड़ा की व्यथा की अन्याय के प्रतिकार की कोई भाषाई कला नहीं होता। समाज का यह बड़ा हिस्सा है, सही मायनों में जिसे कहना आता है। सही मायने यह कविता भारतीय समाज का प्रतिनिधित्व करती है। उसकी उपेक्षा के प्रतिरोध का प्रतिनिधित्व करती है ।